Language and Learning foundation

TATA TRUSTS

मॉड्यूल 1

प्रारंभिक भाषा और साक्षरता : एक झलक

इकाई 1 : भाषा क्या है?
इकाई 2 : साक्षरता क्या है?

प्रारंभिक भाषा शिक्षण सर्टिफ़िकेट कोर्स 2018

कोर्स मॉड्यूलों में प्रयुक्त प्रतीक

- ज़रा सोचिए
- मुख्य संदेश / बिंदु / रोचक तथ्य
- मॉड्यूल के साथ सुनने वाले ऑडियो
- मॉड्यूल के साथ देखे जाने वाले वीडियो
- आवश्यक पठन या अतिरिक्त पठन
- किसी खण्ड या मॉड्यूल के बीच में संबंध
- फ़ोन कॉल के लिए प्रश्न
- गतिविधियाँ : पढ़िए, सोचिए और करिए
- स्व– आकलन
- अभ्यास कार्य
- असाइनमेंट
- केस स्टडी

प्रारंभिक भाषा और साक्षरता : एक झलक

इकाई 1 : भाषा क्या है?

इकाई 2 : साक्षरता क्या है?

मॉड्यूल–1

तृतीय संस्करण – 2018

डवलपमेंट पार्टनर्स

TATA TRUSTS

CENTRAL SQUARE
FOUNDATION

© लैंग्वेज एंड लर्निंग फ़ाउंडेशन 2018
इस कोर्स के तहत छपी किसी सामग्री का पुनः प्रकाशन लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन की अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता। यदि आप इसमें से कुछ सामग्री प्रशिक्षण के लिए इस्तेमाल करना चाहते हैं, तो हमें course@languageandlearningfoundation.org पर ईमेल भेजें।

विषय सूची

इकाई–1 : भाषा क्या है?			**02**
1.	भाषा क्या है ?		02
2.	भाषा के कार्य		03
	2.1	भाषा और संप्रेषण	06
	2.2	भाषा और विचार	06
	2.3	भाषा और सीखना	07
	2.4	भाषा और अवधारणाएँ	08
3.	बच्चे और मौखिक भाषा		10
4.	बोलचाल की भाषा और अकादमिक भाषा		12
	4.1	'बुनियादी पारस्परिक संप्रेषण कौशल' (बिक्स) और 'संज्ञानात्मक अकादमिक भाषायी निपुणता' (कैल्प)	13
	4.2	बिक्स और कैल्प भाषा कौशलों में अंतर	14
5.	लिखित भाषा और मौखिक भाषा की तुलना		15
इकाई–2 : साक्षरता क्या है?			**18**
1.	साक्षरता क्या है?		18
	1.1	कक्षा 2 तक साक्षरता विकास	19
2.	भाषा विकास के तीन घटक		19
	2.1	मौखिक भाषा विकास	19
	2.2	पढ़ना किसे कहते हैं?	23
	2.3	लिखना क्या है?	34

विषय सूची

3.	स्वतंत्र पाठक कौन होता है?	36
4.	भाषा शिक्षण को प्रभावित करने वाली अन्य परिस्थितियाँ	37
निष्कर्ष और सारांश		**40**
स्व–आकलन		**42**
असाइनमेंट		**44**
संदर्भ		**49**

शब्दावली

शब्द पहचान :

लिखित शब्दों को सही–सही पहचानने की प्रक्रिया। इसके लिए शब्दों को या तो (1) डिकोडिंग या ध्वनि पहचान के ज़रिए या (2) दृश्य पहचान (Sight Recognition) के ज़रिए पहचाना (या पढ़ा) जा सकता है, या (3) संदर्भ पर आधारित शब्द का अनुमान लगाने के ज़रिए। पढ़ने के विभिन्न चरणों में बच्चे एवं वयस्क शब्द पहचान की इन तीनों प्रक्रियाओं का इस्तेमाल करते हैं।

दृश्य शब्द :

दृश्य शब्द ऐसे शब्द होते हैं जिन्हें बच्चे सचेत प्रयास (डिकोडिंग) के बिना यानी, देखते ही पहचान और पढ़ लेते हैं। जैसे–जैसे बच्चे निपुण होते जाते हैं, वे अधिकाधिक शब्दों को केवल देखकर पहचानने लगते हैं।यह रास्ता तब संभव होता है जब किसी शब्द को इतनी बार पढ़ लिया हो कि तस्वीर की तरह दिमाग में बस जाए। शब्द पहचान में स्वतःस्फूर्तता विकसित करने के लिए आवश्यक है कि पाठक बहुत सारे शब्दों को दृश्य शब्दों के रूप में पहचानने में सक्षम हो।

डिकोडिंग :

अक्षर और ध्वनि के संबंध के ज्ञान के आधार पर किसी शब्द को प्रिंट से ध्वनि में बदल कर उच्चारित करने की क्षमता को डिकोडिंग कहते हैं। इसमें अलग–अलग वर्णों और वर्ण समुच्चयों (अक्षर) की ध्वनियों को पहचानना, ध्वनियों को आपस में जोड़ना (blending), पूरे शब्द को एक साथ उच्चारित करना (या पढ़ना) और उसका अर्थ समझना (यदि वह शब्द पहले से ज्ञात है) आदि प्रक्रियाएँ आती हैं।

पाठ (Text) :

'पाठ' शब्द अंग्रेज़ी के 'टेक्स्ट' शब्द के लिए प्रयोग किया गया है। इस शब्द का प्रयोग भिन्न प्रकार की लिखित सामग्री को ध्यान में रखकर किया गया है, जैसे– नाटक, कहानी, कविता। यानी, पाठ शब्द द्वारा ऐसी सभी लिखित सामग्री को संबोधित किया गया है न कि केवल पाठ्यपुस्तक के पाठ को। पाठ संपूर्ण न हो कर, रचना का एक हिस्सा भी हो सकता है, जैसे कि अनुच्छेद।

शब्दावली :

शब्दों और शब्दार्थों के ज्ञान को 'शब्दावली' कहा जाता है। यह ऐसे सभी शब्दों का योग होता है जिनको बच्चे पढ़ते, लिखते, सुनते और बोलते समय समझते और/या प्रयोग करते हैं।

प्रवाहपूर्ण पठन :

किसी पाठ को अच्छी गति के साथ सही ढंग से और हाव–भाव के साथ पढ़ने की क्षमता को प्रवाहपूर्वक पठन कहा जाता है।

अर्थ निर्माण :

अर्थ निकालने की क्षमता को 'समझना' कहा जाता है। यह पढ़ने की प्रक्रिया में किसी पाठ से अर्थ निकालने या अर्थ निर्माण करने की क्षमता है। यह किसी लिखित पाठ को समझने, उस पर सोचने, उससे सीखने की क्षमता है।

स्थानिक एवं सार्विक समझ :

प्रत्येक शब्द और प्रत्येक वाक्य के शाब्दिक अर्थ को समझना 'स्थानिक समझ' कहलाता है। अतः जो कुछ पाठ में कहा गया है या जो कहानी में घट रहा है (तथ्य और विवरण) उसको शब्दशः समझना। दूसरी तरफ़, किसी पाठ के सार्विक या व्यापक अर्थ को समझने की क्षमता 'सार्विक' या 'समावेशी' समझ कहलाती है। यह किसी पाठ के अलग–अलग हिस्सों को एक–दूसरे से जोड़कर उसके मुख्य विचार या अवधारणा को समझने तथा उसकी व्याख्या करने की प्रक्रिया होती है। 'सार्विक' समझ में किसी पाठ को समझने या व्याख्या करने के लिए बच्चे का पिछला ज्ञान व अनुभव बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

बीआईसीएस / बिक्स (BICS) :

बुनियादी पारस्परिक संप्रेषण कौशल / बिक्स (Basic Interpersonal Communication Skills - BICS) ऐसा भाषा कौशल है जिसकी आवश्यकता हमें सामाजिक परिस्थितियों में होती है, जैसे– फ़ोन पर बात, मित्रों से बातचीत इत्यादि। यह दैनिक बोलचाल की भाषा होती है जो कि दूसरों के साथ सामाजिक आदान–प्रदान के लिए प्रयोग की जाती है। इस तरह का भाषा कौशल संज्ञानात्मक दृष्टि से बहुत कठिन नहीं होता।

सीएएलपी / कैल्प (CALP) :

संज्ञानात्मक अकादमिक भाषायी निपुणता / कैल्प (Cognitive Academic Language Proficiency - CALP) का आशय उस अकादमिक भाषा में निपुणता से है जो स्कूल के अकादमिक परिवेश में सीखने के लिए आवश्यक होती है। इस तरह अमूर्त अकादमिक भाषा कौशल पाठ्यपुस्तकों में दी गई सामग्री या अध्यापक की प्रस्तुति समझने के लिए आवश्यक होता है।

भूमिका

कोर्स की शुरुआत में हमने देश के ज़्यादातर हिस्सों में प्राथमिक स्कूल के बच्चों की पढ़ने की कमज़ोर क्षमता पर कुछ नज़र डाली। अब हमें धीरे–धीरे इस बात को गहराई से तलाशना होगा कि इसके क्या–क्या कारण हो सकते हैं। आने वाले मॉड्यूलों में हम इन कारकों की ओर और अधिक ध्यान देंगे। किंतु इससे पहले कि हम बच्चों की निम्न भाषायी प्रगति के कारण समझ पाएँ, आइए पहले यह समझने की कोशिश करते हैं कि भाषा आखिर क्या है? साक्षरता क्या है? और इन्हें सीखने की क्या प्रक्रियाएँ होती हैं? साक्षरता को समझने से पहले यह समझना बहुत ज़रूरी है कि भाषा अपने आप में ही इंसानों के लिए एक बेहद शक्तिशाली औजार व विचार संप्रेषण का माध्यम है। शायद, इंसानी क्षमताओं में सोचने की क्षमता के बाद भाषा ही वह क्षमता है जो इंसान को पशुओं से बहुत आगे ले जाती है।

क्या आपने कभी ध्यान दिया है कि छोटे बच्चे किस तरह तेज़ी से सहज रूप में अपने आस–पास की भाषा को सीख लेते हैं? असल में भाषा की जड़ें जन्म के तुरंत बाद ही, यहाँ तक कि माँ के गर्भ में ही, बननी शुरू हो जाती हैं। एक नन्हे बच्चे की विकसित होती भाषा क्षमता के ज़रिए हम यह समझेंगे कि भाषा असल में क्या है? और इंसानों के लिए क्या कुछ करती है? किंतु क्या पढ़ना सीखना भी इतनी ही सहज प्रक्रिया होती है? पढ़ना सीखने में कौन से उप–कौशल शमिल होते हैं? इस मॉड्यूल में हम यह भी पढ़ेंगे कि मौखिक भाषा, पठन और लेखन में क्या संबंध होता है?

अधिगम उद्देश्य

1. भाषा व साक्षरता के विभिन्न उद्देश्य व विशेषताओं को समझना और व्यक्त कर पाना।
2. इसकी ठोस समझ बनाना कि पढ़ना क्या होता है और उसमें कौन से कौशल शामिल हैं।
3. यह समझ बनाना कि हमारे भारतीय संदर्भों में कुछ अन्य कारक हैं जिनको भाषा और साक्षरता शिक्षण सुधारने के लिए समझना ज़रुरी है।

इकाई–1
भाषा क्या है?

1. भाषा क्या है ?

यह समझने के लिए कि भाषा क्या है? आइए दो–तीन छोटे प्रयोग करके देखते हैं। कोई एक परिचित शब्द लें जिसे आप दो या ज़्यादा भाषाओं में जानते हों। इस शब्द को सभी भाषाओं में ज़ोर से बोलकर उच्चारित करें। उच्चारण पर ध्यान देने के लिए चाहे उन्हें हिंदी की लिपि में लिख भी लें। **अब इन शब्दों में आने वाली ध्वनियों को ध्यान से सुनें। क्या आपको अलग–अलग भाषाओं के इन शब्दों में अर्थ के अलावा कोई अन्य समानता दिखती है? हाँ / नहीं**

आप देखेंगे कि ज़्यादातर समानार्थी शब्दों में भिन्न भाषाओं में किसी भी प्रकार का मेल नहीं है। उदाहरण के लिए यदि हम 'कुर्सी' शब्द को हिंदी, अंग्रेज़ी और तमिल में देखें–

कुर्सी, चेयर, नारकलियिल

न तो इनमें आपस में कोई मेल है, और न ही एक असली कुर्सी के आकार से कोई सीधा संबंध। इन शब्दों में प्रयोग होने वाली ध्वनियों का चयन पूरी तरह से मनमाना है, लेकिन फिर भी उस भाषा को बोलने वाले लोग यह ध्वनियाँ निकालने पर शब्द भी समझते हैं और उसका अर्थ भी।

इसी प्रकार एक छोटे वाक्य को दो अलग भाषाओं में लिखते हैं, जैसे–

- यह एक कुर्सी है।
- This is a chair.

ध्यान दीजिए कि ये साधारण वाक्य भी निश्चित व्याकरण के नियमों से बँधे हुए हैं। ऊपर दी गई दोनों भाषाओं, हिंदी व अंग्रेज़ी के वाक्य बनाने के नियम भी समान नहीं हैं। 'है' या 'पे' वाक्य में अलग जगह पर आता है। उसे कहीं और ले जाने से वाक्य संरचना बिगड़ जाती है।

इस तरह से भाषा को एक ऐसी औपचारिक व्यवस्था के रूप में समझा जा सकता है जो प्रतीकों का इस्तेमाल करके संप्रेषण करती है। जैसे 'कुर्सी' किसी ख़ास वस्तु का प्रतीक है, और इसमें इन उच्चारणों– कु, र, सी को भी प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया गया है। साथ ही हमने देखा, वाक्य और शब्द आपस में निश्चित नियमों से बँधे होते हैं। बहुत साधारण स्तर पर भाषा को मौखिक, लिखित या सांकेतिक अभिव्यक्ति के लिए प्रयोग की जाने वाली औपचारिक व्यवस्था के रूप में समझा जा सकता है, पर भाषा इससे कहीं अधिक व्यापक होती है जो कि हम अगले खंड में देखेंगे ।

2. भाषा के कार्य

गतिविधि–1

हम नीचे कई वाक्य दे रहे हैं। उनसे आप अनुमान लगाएँ कि यहाँ पर भाषा किस तरह का कार्य कर रही है। आपको पहले स्तंभ में दिए वाक्यों का दूसरे स्तंभ में दिए कार्यों से उपयुक्त मिलाप करना है।

वाक्य	वाक्य में निहित भाषा के कार्य
1. मैं बाज़ार जा रहा हूँ	क एक व्यक्ति के अंदर आने वाली सोच को प्रकट कर रही है। व्यक्ति लगभग ख़ुद से बात कर रहा है।
2. भारत एक स्वतंत्र देश है।	ख हमारे सांस्कृतिक मूल्यों को दर्शा रही है। यहाँ किसी व्यक्ति का स्वागत किया जा रहा है। शब्दों के चयन से ही पता लग जाता है कि उसे सम्मानपूर्वक बुलाया जा रहा है। ''आओ, अंदर आओ'' में एक अलग तरह की भावना दिखती है।
3. नमस्कार! आइए, आपका स्वागत है।	ग एक व्यक्ति से दूसरे तक विचार पहुँचाने या संप्रेषण का काम कर रही है।
4. उफ़, इतना गर्म।	घ भाषा के ज़रिए स्थानों की दूरियाँ पाट कर एक जगह होने वाली घटना बहुत सारी जगहों पर पहुँचाई जा रही है।
5. ह्वेनसांग ने लिखा कि 634 ईसवी में मथुरा में दो हज़ार बौद्ध भिक्षु थे।	ङ ऐसी घटनाओं का ब्यौरा दे रही है जो सैकड़ों वर्ष पहले हुए। इस प्रकार भाषा, समय और स्थान की छोटी या बड़ी दूरियाँ पाटने में इंसानों की मदद करती है।
6. अमेरिका के चुनाव में 'डोनाल्ड ट्रंप' जीते।	च भावनाओं और सौंदर्य व्यक्त करने के साधन के रूप में प्रयोग की जा रही है।
7. जब मैं बड़ी होऊँगी, तो पूरी दुनिया घूमूँगी।	छ भाषा केवल पिछली घटनाओं को ही नहीं, बल्कि भविष्य की घटनाओं के बारे में भी मनुष्यों को सोचने, योजना बनाने या कल्पना करने में मदद करती है।
8. पक्षियों की मधुर चहचहाट से पूरा वातावरण गुंजायमान हो उठा।	ज विचारों और अवधारणाओं को व्यक्त करने का साधन है। यह 'देश', 'स्वतंत्र' जैसे विचारों को नाम दे रही है, साथ ही एक विशिष्ट देश को एक ख़ास नाम 'भारत' भी दे रही है।

उत्तर : 1. (ग) 3. (ख) 5. (ङ) 7. (छ) 2. (ज) 4. (क) 6. (घ) 8. (च)

ऊपर दिए गए कार्यों के अलावा भाषा कहीं अधिक व्यापक भूमिकाएँ भी निभाती है।

"पशु अवस्था से सभ्यता की ओर मनुष्य की प्रगति को भाषा ने ही संभव बनाया है।"

– ऐल्डस हक्स्ले

मानवीय भाषा एक अनूठी संरचना है, क्योंकि यह हमें थोड़े से प्रतीकों व ध्वनियों की मदद से असंख्य शब्द व वाक्य रचने की क्षमता प्रदान करती है। कई पशु प्रतीकों या ध्वनियों से एक–दूसरे से संप्रेषण अवश्य करते हैं, लेकिन उनकी क्षमताएँ मनुष्यों के मुकाबले बेहद सीमित हैं। मानवीय भाषा अनूठी है।

पशुओं में संचार के जो थोड़े–बहुत प्रतीक हैं वे ज़्यादातर आनुवांशिक (hereditary) हैं; जबकि मानवीय भाषाओं में प्रतीक और नियम ज़्यादातर समाज से ही सीखने पड़ते हैं। कुछ आनुवांशिक भी हैं, जैसे– रोना।

आइए, एक अभ्यास के ज़रिए हम यह देखने की कोशिश करें कि मनुष्य अपनी भाषा के ज़रिए कितने तरह की मानसिक प्रक्रियाएँ करते हैं।

गतिविधि–2

नीचे दिए पैरा को पढ़ें–

"जब भी तुम अपने घर में बल्ब जलाते हो, बिजली ताँबे के तारों में दौड़ती हुई तुम्हारे घर को रोशन करती है। ऐसे हर क्षण में तुम उस खदान मज़दूर से जुड़ जाते हो, जिसने ताँबे की गहरी खान में घुसकर ताँबे को कच्ची चट्टान से निकाला था। खदानों में काम करने वालों का जीवन बेहद कठिन और जोखिम भरा है। वे गंभीर ख़तरों से जूझते हुए हमारे लिए धातुएँ, कोयला, खनिज आदि धरती के गर्भ से निकालते हैं। हाल ही में चिली में धरती की गहराई में 33 खनिक अंदर फँस गए थे। उनके बचने की उम्मीद न के बराबर थी। लेकिन 69 दिनों तक ज़मीन के अंदर सुरंग में दबे ये लोग कैसे ज़िंदा वापस आए, पढ़ो यह हैरतअंगेज़, रोमांचक किस्सा, जिसे पूरी दुनिया ने साँस रोककर घटते देखा।"

इसको ध्यान से दो–तीन बार पढ़ते हुए यह भी देखने की कोशिश करें कि पढ़ते हुए केवल शब्द पहचानने के अलावा, यह लेख आपको किन–किन मानसिक क्रियाओं के लिए प्रेरित कर रहा है।

नीचे दी हुई क्रियाओं में से सब छाँटे जो आप पढ़ते हुए कर रहे होंगे।

अनुभवों को बताना या समझना	जानकारी का आदान–प्रदान	तर्क देना
अतीत, वर्तमान या भविष्य के बारे में बात करना	भावनाएँ महसूस या व्यक्त करना	ज्ञान या समझ का निर्माण करना
मूल्यांकन करना	असल या काल्पनिक घटनाओं के बारे में बात	अमूर्त अवधारणाओं के बारे में बात करना
पूर्व ज्ञान को सक्रिय करना	सहमति या असहमति तय करना	अर्थ निकालना

हम देख सकते हैं कि यह लेख पढ़ते हुए हम ऊपर बताई गई लगभग सभी प्रक्रियाएँ करते हैं।

हम इस पाठ के साथ कई स्तरों पर अन्तःक्रिया कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, जब पाठ कहता है कि खदानों का काम जोख़िम भरा है, तो आप उसका मूल्यांकन करते हैं कि यह बात आपको वास्तव में सही लगती है या नहीं। इसके बारे में आप पहले से क्या जानते हैं? इसी तरह पाठ यह तर्क देता है कि जब हम कोयला जलाते हैं तो खदान मज़दूर से जुड़ जाते हैं, तो हम अपनी तर्क–शक्ति से इस बात को स्वीकार या अस्वीकार करते हैं। जब पाठ हमें मज़दूरों के कठिन हालात की बात बताता है तो हम भावनाएँ महसूस करते हैं। यही नहीं, हम बल्ब, बिजली, चट्टान, खान आदि बहुत से शब्दों के बारे में अपना पूर्वज्ञान इस्तेमाल करते हैं। हम बिजली, खतरा, जोख़िम, खनिज जैसी अमूर्त अवधारणाओं की समझ का भी इस्तेमाल करते हैं। सबसे हैरानी की बात तो यह है कि इस छोटे से लेख के ज़रिए हम समय और स्थान की सारी सीमाओं के पार जाकर अनुभव या ज्ञान का आदान–प्रदान कर सकते हैं।

अभी तक की चर्चा से ज़ाहिर है कि भाषा का प्रयोग एक अत्यंत जटिल और विशिष्ट मानवीय कौशल है।

2.1 भाषा और संप्रेषण

अपने विचारों, भावनाओं, सोच व जानकारी को संप्रेषित करना भाषा की सबसे स्वीकार्य उपयोगिता मानी जाती है। इस तरह का संप्रेषण तब होता है जब हम बोलते, सुनते, पढ़ते या लिखते हैं। लिहाज़ा, भाषा में सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना, ये चारों आयाम समाहित हैं।

2.2 भाषा और विचार

भाषा और विचार का आपस में क्या संबंध है? इस पर बहुत बहस और अनुसंधान हो चुके हैं।

आपका क्या मानना है, नीचे लिखे वाक्यों में जाँचें–

1. क्या आप कभी कुछ ऐसा महसूस करते हैं या सोचते हैं जो शब्दों में नहीं कह पाते? हाँ / नहीं
2. क्या आप कई कल्पनाएँ शब्दों के बिना भी करते हैं? हाँ / नहीं
3. क्या आपके सारे विचार शब्दों में ही आते हैं? हाँ / नहीं

यह तो बहुत स्पष्ट है कि शब्दों के बिना हमारा सोचना बहुत सीमित हो जाएगा। लेकिन क्या शब्दों के बिना सोचना संभव भी है? इस प्रश्न पर विद्वानों के अलग–अलग दृष्टिकोण हैं।

फ्राँसीसी मनोवैज्ञानिक पियाजे का कहना है कि भाषा चिंतन पर आश्रित होती है। इसका मतलब है कि सोच भाषा से पहले आती है। दूसरी ओर रूसी मनोवैज्ञानिक वायगॉस्की के विचार इससे कुछ भिन्न हैं।

वाईगोत्स्की का कहना है कि भाषा और विचार को अलग नहीं किया जा सकता। वयस्कों में **आंतरिक वाणी** (inner speech) सोचने की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका रखती है। यदि आप कोई कमोबेश जटिल काम कर रहे हैं, तो आप पाएँगे कि उस काम के बारे में सोचते हुए आप अपने आप से ही बात करते जा रहे हैं। इस प्रकार हमारे विचार और आंतरिक वाणी आपस में गुँथे होते हैं और उनको अलग करना कठिन है।

आंतरिक वाणी बचपन में विकसित होती है। जीवन के पहले दो वर्षों के दौरान हमारे विचार शब्दों से रहित होते हैं। इसके बाद शब्द हमारे सोचने में अहम भूमिका अदा करना शुरू कर देते हैं। छोटे बच्चे जो कर रहे होते हैं, उसके बारे में वे अक्सर अपने आपसे बात करते हुए दिखाई देते हैं। इसे वायगॉस्की ने **निजी वाणी** (private speech) कहा है। इस तरह का बोलना बच्चे की उम्र बढ़ने के साथ कम होता जाता है और विकास के बाद की अवस्थाओं में (लगभग 7 साल की उम्र के आसपास) आंतरिक वाणी उसकी जगह लेती जाती है। इससे पता चलता है कि सोचने के लिए वाणी बहुत महत्वपूर्ण बौद्धिक भूमिका निभाती है।

यह बहस अभी भी ख़त्म नहीं हुई है, मगर हम निश्चय के साथ कह सकते हैं कि भाषा और विचार घनिष्ठ रूप से आपस में जुड़े होते हैं। अगर भाषा भली–भाँति विकसित नहीं हो पाती है तो सोचने–समझने तथा तर्क, समस्या–समाधान, मूल्यांकन आदि की क्षमताएँ भी शायद पूरी तरह विकसित नहीं हो पाती हैं। यानी, मनुष्य के रूप में विकसित होने, सीखने और समझने के लिए आवश्यक इन महत्वपूर्ण मानसिक क्षमताओं के विकास के लिए भाषा निर्णायक भूमिका अदा करती है।

2.3 भाषा और सीखना

अब हम भाषा के एक और महत्वपूर्ण कार्य के बारे में बात करेंगे। वह है– सीखने के सबसे महत्वपूर्ण साधन के रूप में भाषा। क्योंकि भाषा के ज़रिए ही मानसिक क्षमताओं का विकास होता है, भाषा सीखने का सबसे सशक्त माध्यम है। केवल **'भाषा सीखना'** ही अपने आप में काफ़ी नहीं, **'भाषा के ज़रिए सीखना'** वह शक्तिशाली क्षमता है जो हमें भाषा से मिलती है।

ऑस्ट्रेलियायी भाषाविद् हैलिडे के अनुसार जब हम कुछ भी सीखते हैं तो अर्थ निकालकर समझ बनाते हैं। अर्थ–निर्माण के लिए भाषा ही सबसे महत्वपूर्ण ज़रिया होती है। आइए देखें–भाषा किस तरह हमें अधिगम या सीखने में मदद करती है।

आकृति–1 में दिखाई गई सभी प्रक्रियाओं के ज़रिए भाषा हमारे लिए सीखने के माध्यम के रूप में कार्य करती है। इसे **'भाषा आधारित अधिगम सिद्धांत'** के नाम से जाना जाता है। ध्यान दें कि जब हम कुछ भी नया सीखते और समझते हैं और यदि वह बात हमें समझ आ जाती है, तो हम उसे अपने शब्दों में व्यक्त कर सकते हैं। अर्थात हम उस ज्ञान को आत्मसात् करके एक तरह से एक नया रूप दे सकते हैं। बाहर उपलब्ध ज्ञान और शब्द 'हमारे अपने' हो जाते हैं।

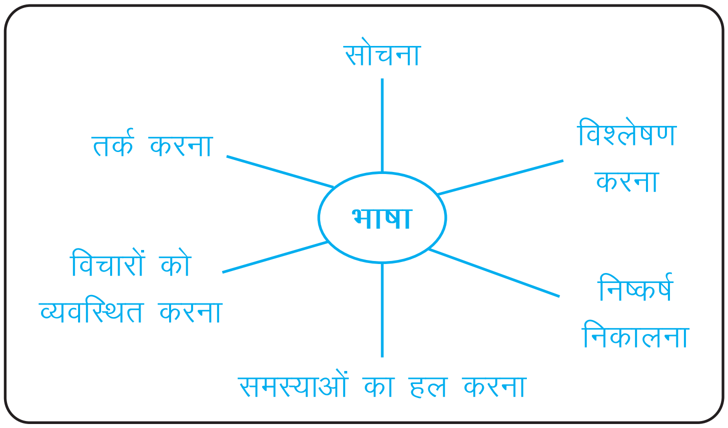

आकृति–1

"जब बच्चे भाषा सीखते हैं तो वे बहुत सारे विकल्पों में से सिर्फ़ एक चीज़ ही नहीं सीख रहे होते हैं, बल्कि वे सीखने की आधारशिला सीख रहे होते हैं। – हैलिडे,1993"

2.4 भाषा और अवधारणाएँ

आइए, देखें कि भाषा किस तरह हमें अवधारणाएँ बनाने में मदद करती है।

गतिविधि–3

हम नीचे कुछ शब्द दे रहे हैं। आप उस शब्द का दूसरे शब्दों में वर्णन करने की कोशिश करें। यह मानकर लिखें कि यह शब्द आपकी भाषा में उपलब्ध नहीं हों तो आप उस बात को कैसे व्यक्त करेंगे?

1. **चिड़िया** ....

....

....

2. **घर** ....

....

....

3. **देश** ....

....

....

चिड़िया : जैसे ही हम चिड़िया जैसा नाम एक अवधारणा को देते हैं, हम उसे दूसरे बहुत से नामों से अलग एक श्रेणी में डाल देते हैं। ध्यान दें कि इसे एक वर्ग बनाने से पहले हमने तरह–तरह की कई चिड़ियाएँ देखी–पहचानी होंगी। यह भी देखा होगा कि उनमें क्या विशेषताएँ हैं तथा वे अन्य जीवित प्राणियों से किस तरह अलग हैं। इस प्रकार देखी या महसूस की हुई चीज़ों को शब्द या अवधारणा का नाम देकर हम स्मृति में बसा लेते हैं और उनका कुशल प्रयोग भाषा में करने लगते हैं। हम इन्हें **'प्रत्यक्ष अवधारणाएँ'** कह सकते हैं, क्योंकि इन्हें हम अपनी इंद्रियों के ज़रिए देखते या सीखते हैं।

घर : ध्यान दें कि घर जैसी वस्तु अपने रंग–रूप के कारण नहीं, बल्कि अपने प्रयोग के कारण महत्वपूर्ण है। इंसान जिस प्रकार अपने जीवन में वस्तुओं का प्रयोग करते हैं, उसके अनुसार उन्हें नाम देकर एक अवधारणा के रूप में स्थापित कर लेते हैं। घर शब्द सुनते ही आपकी स्मृति में वे सारे प्रयोग आ जाते हैं जो आप घरों के साथ करते हैं। यही बात घड़ी, दीवार, बिजली, सड़क आदि व्यवहार में

लाने वाली ढेरों चीज़ों, पर लागू होती है। इन्हें हम **'व्यावहारिक अवधारणाएँ'** कह सकते हैं।

देश : यह स्पष्ट है कि देश अमूर्त विचार है जिसे हम देख नहीं सकते, न ही इस्तेमाल कर सकते हैं। लेकिन इस अवधारणा के आते ही, बहुत से विचार इससे जुड़ जाते हैं। इस प्रकार की अमूर्त अवधारणाओं को विशेष नाम देकर, भाषा हमें अपने दिमाग में 'खूँटे' प्रदान करती है जिनके ज़रिए बहुत से विचार आपस में बँध सकते हैं। ऐसी अवधारणाओं को हम **'सैद्धांतिक'** कह सकते हैं जिनके ज़रिए हम अमूर्त और सिद्धांत संबंधी विचार व्यक्त कर सकते हैं।

ऊपर दिए उदाहरणों से आप देख सकते हैं कि किस प्रकार भाषा हमें विचारों या अवधारणाओं के बारे में सोचने या बात करने का अवसर देती है। इस तरह से यह विचारों के प्रतिनिधित्व का एक शक्तिशाली औजार है।

“शिक्षा के क्षेत्र में भाषा ही सब कुछ नहीं है, लेकिन भाषा के बिना शिक्षा में सब कुछ, कुछ भी नहीं है।”

अभ्यास कार्य–1

भाषा के विभिन्न कार्यों के बारे में हम ऊपर वाले खंड में पढ़ चुके हैं, नीचे दिए गए टेबल में भाषा के प्रमुख चार कार्यों को भरें और अपने मेंटर को इसकी फोटो भेजें।

भाषा के प्रमुख कार्य

1	2	3	4
-------------	-------------	-------------	-------------
-------------	-------------	-------------	-------------
-------------	-------------	-------------	-------------
-------------	-------------	-------------	-------------
-------------	-------------	-------------	-------------

अपने उत्तर की फोटो भेजने के लिए या अपना उत्तर टाइप करके भेजने के लिए इस QR कोड को स्कैन करें।

क्या आपको लगता है कि हमारी शिक्षा व्यवस्था में और स्कूल स्तर पर भाषा और भाषा शिक्षण को इस व्यापक नज़रिए से देखा जाता है? या फिर भाषा को केवल अन्य विषयों की तरह ही पढ़ाया जाता है?

3. बच्चे और मौखिक भाषा

आप हैरान होंगे कि बच्चे गर्भ के अंतिम महीनों में, अपनी मूल भाषा के उतार–चढ़ावों को सुनने लगते हैं। जन्म के कुछ दिनों में ही वे कई ध्वनियों, जैसे– 'बा' और 'गा' में अंतर करने लगते हैं। उनके कान में लगातार पहुँचने वाली भाषायी ध्वनियाँ तीन महीने की उम्र होते–होते स्वरों, शब्दों, वाक्यों आदि में छँटने लगती हैं और दिमाग इनमें तारतम्य बिठाने लगता है। मस्तिष्क पर होने वाले कई ताज़ा अध्ययनों ने हमें यह दिखाया है कि मस्तिष्क के कुछ विशेष हिस्से आस–पास मौजूद भाषा पहचानकर, उसे सीखने के लिए तैयार होने लगते हैं। किसी भी भाषा में मौजूद विशिष्ट स्वर (जैसे– आ, अ, इ आदि) 6 महीने की उम्र तक स्थापित होने लगते हैं, और करीब बारह महीने में वर्ण दिमाग में अपनी विशेष जगहों पर जाकर बस जाते हैं। ध्यान देने की बात यह है कि बच्चे का दिमाग उन वर्णों के लिए जगह नहीं बना पाता, जो उसकी मूल भाषा में मौजूद नहीं हैं– उदाहरण के लिए अंग्रेज़ी में 'ढ' या 'ण' वर्ण नहीं हैं, और एक अंग्रेज़ी मूल का बच्चा शायद इन्हें कभी पूरी तरह पहचान या बोल नहीं पाए। आपने शायद देखा हो कि बहुत से बच्चों या वयस्कों को 'श' और 'स' में अंतर करने में बहुत समस्या होती है। इसका कारण भी भाषा के शुरुआती अनुभवों में छुपा है।

जैसा कि हमने देखा, एक नन्हे शिशु का दिमाग बोली में आने वाली नियमित ध्वनियों का वर्गीकरण करता रहता है। जल्दी ही भाषा के ध्वनि संबंधी नियम स्थापित हो जाते हैं। यहाँ तक कि बच्चे का दिमाग यह छँटनी तक करता है कि बोलचाल के कौन से खंड, सबसे ज़्यादा प्रयोग हो रहे हैं। उसके दिमाग में बनने वाले भाषायी जाल में वही प्रथम शब्द बनेगा।

दो साल के बच्चे की शब्दावली में हर रोज़ दस से बीस नए शब्दों को सीखते हुए आश्चर्यजनक प्रगति होने लगती है। यही नहीं, बच्चा अपनी भाषा के बुनियादी व्याकरण के नियम जान चुका होता है। जब ये बच्चे पाँच–छः साल की उम्र में स्कूल पहुँचते हैं, उनके पास कई हज़ार शब्दों का भंडार होता है, व्याकरण के नियम होते हैं, और पूरा 'स्वरशास्त्र' होता है। ध्यान दें कि बच्चे को अपनी इस निपुणता के बारे में कुछ भी सचेत रूप से मालूम नहीं होता। लेकिन तब भी, बिना शक के, उसके दिमाग में बोलने की भाषा का वह सारा संजाल मौजूद होता है, जो आगे जाकर लिखित भाषा की बुनियाद बनता है।

एक अन्य रोचक बात यह है कि बच्चे की दृष्टि प्रणाली भी तेज़ी से विकसित हो रही होती है। कुछ ही महीने का शिशु किसी पूरे दृश्य में से वस्तुओं को देख कर छाँट सकता है और नज़र से उनका पीछा कर सकता है। साल भर का होते–होते शिशु वस्तुओं की रूपरेखा, बनावट और त्रि–आयामी आकार को पहचान सकता है। इस प्रकार जीवन के पहले ही वर्ष में वह अत्यंत महत्वपूर्ण प्रणाली बनने लगती है जो आगे जाकर बच्चे को अक्षर पहचानने में

मदद करती है। हाल ही बच्चों की चेहरे पहचानने की क्षमता का बारीकी से अध्ययन किया गया है। बच्चे पहले ही साल में अपने आस–पास के चेहरे पहचानने लगते हैं। दूसरे साल तक किसी चेहरे को उसके परिवेश से अलग हटाकर भी पहचान सकते हैं। यह क्षमता आगे दस या ज़्यादा साल तक धीरे–धीरे बढ़ती रहती है। ये सारी क्षमताएँ स्कूल में आने वाले पाँच–छः साल के बच्चे को अक्षरों और शब्दों जैसे नए आकार पहचानने में बहुत मदद करती हैं। हालाँकि, यह भी समझना ज़रूरी है कि बच्चे को मिली जैविक क्षमताएँ ही अकेले उसे साक्षर बनाने के लिए काफ़ी नहीं है। बच्चे को साक्षर बनने पहले अपने परिवेश से कई अन्य कौशल सीखने पड़ेंगे।

बच्चों का शुरुआती मौखिक भाषा अर्जन असल में आश्चर्यजनक है। भाषा विज्ञान के कुछ वैज्ञानिक मानते हैं कि हमारे मस्तिष्क की एक विशिष्ट प्रणाली नन्हे शिशु को भाषा सीखने में मदद करती है। इसे **'भाषा–विशिष्ट अधिगम प्रणाली'** (Language Specific Learning Mechanism) कहा जाता है। इन विशेषज्ञों के अनुसार मनुष्य में भाषा सीखने की जन्मजात क्षमता है। इसके लिए मास्तिष्क में एक विशेष हिस्सा है, जिसे **'भाषा अर्जन तंत्र'** (Language Acquisition Device- LAD) कहा जाता है। यह तंत्र भाषा के सभी जटिल नियमों और अंगों को सहज ही अर्जित करने में सक्षम है। इस प्रकार भाषावैज्ञानिक चौम्सकी और उनके समर्थकों का मानना है कि शिशु भाषा–अर्जन करने के मानसिक उपकरण जैविक रूप से लेकर ही पैदा होते हैं।

कुछ अन्य विशेषज्ञों का मानना है कि बच्चे भाषा भी उसी तरह सीखते हैं, जिस तरह वे जीवन के सारे दूसरे पक्षों के बारे में नैसर्गिक रूप से अपना ज्ञान और समझ बनाते जाते हैं।

इन दो पक्षों में से किसी भी पक्ष को मानें, तो भी बच्चों की भाषा के बारे में कुछ बातें स्पष्ट रूप से नज़र आती हैं। पहली यह कि सभी बच्चे जब स्कूल में दाखिला लेते हैं तब तक प्रवाहपूर्वक अपनी मूल भाषा बोल सकते हैं। मौखिक भाषा विकास पठन और लेखन का आधार होती है। छोटे बच्चे मुख्य रूप से बातचीत या बोली की मदद से ही सोचते हैं। बच्चों को बातचीत करने और अपने आप को अभिव्यक्त करने का अवसर देकर अध्यापक सोचने और समझने का कौशल विकसित करने में बच्चों की मदद कर सकते हैं।

दूसरी अति–महत्वपूर्ण बात जो शिक्षकों को समझनी ज़रूरी है, वह यह कि अलग–अलग परिवारों से आने वाले बच्चों की बोलचाल की भाषा में कई तरह के फर्क होते हैं। घर के भीतर होने वाली बच्चों और वयस्कों की बातचीत कैसी है, यह भाषा उस पर निर्भर करती है। वयस्क बच्चों के साथ कितना समय बिताते हैं, बातचीत किस बारे में होती है, शिशु किस तरह की भावनात्मक सुरक्षा महसूस करते हैं– इन सभी बातों का बच्चे के बोलचाल के स्वरूप और गति पर बहुत असर होता है। परिवार में प्रारंभिक वर्षों में हुई बोलचाल की मात्रा और गुणवत्ता बहुत गहरे रूप में बच्चों की शब्दावली और संप्रेषण–कौशल पर प्रभाव डालती है। छोटी उम्र में बच्चों की शब्दावली में बहुत गहरे फर्क दिखाई पड़ते हैं। ज़ाहिर है बच्चों के बीच शब्द ज्ञान का यह फ़ासला स्कूल में प्रवेश से पहले ही पैदा हो जाता है। यदि स्कूल इस मामले में बच्चों की सहायता न करे तो बहुधा यह फ़ासला बाद के वर्षों में भी नहीं भर पाता।

यह भी समझना अत्यावश्यक है कि यद्यपि बच्चे प्रवाह से बोल सकते हैं, तो भी उनके शब्द–ज्ञान और औपचारिक स्कूली भाषा के बीच अच्छा–ख़ासा फर्क भी होता है।

एक शोध के अनुसार प्री–स्कूल में दाखिले के समय भाषायी रुप से कमज़ोर 25 प्रतिशत बच्चे आम बच्चों के मुकाबले एक हज़ार कम मूल शब्दार्थ जानते हैं। स्थिति और ज़्यादा खराब हो जाती है जब कम शब्दावली वाले यही बच्चे कक्षा 1 और 2 में अन्य बच्चों के मुकाबले प्रतिदिन कम नए शब्द सीखते हैं। परिणाम यह होता है कि कक्षा 2 के अंत तक आते–आते औसत बच्चों और पिछड़े हुए चौथाई बच्चों के बीच 2000 शब्दों का लगातार बढ़ता हुआ फ़ासला बन जाता है। अगर बच्चे की घर की भाषा स्कूल की भाषा से भिन्न हो तो यह फ़ासला और ज़्यादा गंभीर हो जाता है।

इस चर्चा से यह देखा जा सकता है कि बच्चे की मौखिक भाषा में जैविक कारकों और भाषायी परिवेश, दोनों का ही बड़ा योगदान होता है।

4. बोलचाल की भाषा और अकादमिक भाषा

नीचे दो अलग–अलग संदर्भों में की जा रही बातचीत के उदाहरण दिए गए हैं। एक बच्ची रेणु पहले उदाहरण में अपनी माँ से बात कर रही हैं व दूसरे उदाहरण में अपने पिता से। इन दोनों बातचीत को गौर से पढ़िए और बताइए कि इसमें आपको किस तरह का अंतर दिखाई देता है।

स्थिति–1	स्थिति–2
रेणु : मैं स्कूल नहीं जा रही। **माँ** : क्यों? **रेणु** : देखो कितने काले–काले बादल हो रहे हैं। **माँ** : तो? **रेणु** : अरे मैं भीग जाऊँगी ना। और फिर... **माँ** : और फिर क्या.... लो ये लो (छाता देते हुए) और चुपचाप स्कूल जाओ। **रेणु** : पर छाता तो पापा ले जाएँगे ना। **माँ** : बहाने मत बनाओ। ये रखो अपना टिफिन बैग मैं और जाओ। रेणु (छाता खोलते हुए और गौर से छाते को देखते हुए) : इतना बड़ा।	**रेणु** : यह हवा में जहाज कैसे उड़ पाता है? **पिता** : हवाई जहाज में इँजन होता है जिसमें ईंधन डालना पड़ता है। **रेनू** : इंधन क्या होता है? **पिता** : जो हवाई जहाज को ताकत देता है वैसे ही जैसे हमारे स्कूटर में हम तेल डालते है और हम खाना खाते हैं जिससे हमारे शरीर को ऊर्जा मिलती है और हमारा शरीर गति करता है। **रेणु** : पर हमारा स्कूटर तो हवा में नहीं उड़ता और ना ही हम। **पिता** : क्योंकि वह गति इतनी नहीं होती कि उड़ने के लिए जरूरी ताकत पैदा कर सके और हवाई जहाज के दो पंखों के आकार से भी उसको उड़ने में आसानी होती है। **रेणु** : ओह अच्छा वैसे ही जैसे चिड़ियों के पंखों के आकार उनको हवा में उड़ाते है।

अंतर लिखिए –

1. ....

2. ....

3. ....

अगर हम इन दोनों स्थितियों में की जा रही बातचीत पर गौर करें तो हमें कई तरह के अंतर साफ नजर आएँगे, जैसे–

स्थिति 1 : पहली स्थिति में बातचीत का संदर्भ जाना पहचाना सा है और यदि आपके लिए यह भाषा उतनी परिचित नहीं भी है तो भी आप संदर्भ से बहुत कुछ अंदाजा लगा सकते हैं, जैसे– जब रेणु आसमान को देखकर बोल रही हैं तो आप अंदाजा लगा सकते हैं कि शायद बादल का जिक्र हो रहा है। माँ जब छाता दे रही हैं तो आप छाता शब्द का अंदाजा आसानी से लगा सकते हैं। इसी तरह से टिफिन और बैग जैसे शब्दों का भी और बच्ची के हावभाव से आप अंतिम वाक्य का मतलब भी शायद समझ जाएँ। जिन शब्दों का इस्तेमाल किया जा रहा है वे आम बातचीत के शब्द हैं, जैसे– बादल, छाता, भीगना, स्कूल आदि। बातचीत का विषय भी ऐसा है जो बहुत सहज है, वाक्यों के अर्थ भी सीधे–सीधे निकाले जा सकते हैं।

स्थिति 2 : दूसरी स्थिति में संदर्भ उतना सहज नहीं है और बातचीत को समझने के लिए चीजें आपके सामने दिखाई नहीं दे रही हैं। बातचीत का विषय भी कोई घरेलू या आम बातचीत का नहीं है। यानि आपको अर्थ निकालने के लिए काफी हद तक भाषा पर ही निर्भर रहना होगा। जिन शब्दों का इस्तेमाल हो रहा है वे अवधारणाएँ भी तुलनात्मक रूप से अकादमिक और अमूर्त किस्म की हैं, जैसे– ऊर्जा, ईंधन, गति, आदि। वाक्यों के अर्थ समझने के लिए शायद आपको तुलना करनी हो और निष्कर्ष निकालना पड़े या अलग–अलग शब्दों के बीच तार्किक संबंध खोजने पड़ें, जैसे– हमारा खाना खाना और जहाज के ईंधन की तुलना या फिर ऊर्जा और गति में क्या संबंध है।

4.1 'बुनियादी पारस्परिक संप्रेषण कौशल' (बिक्स) और 'संज्ञानात्मक अकादमिक भाषायी निपुणता' (कैल्प)

प्रसिद्ध चिंतक डॉ. जिम कमिंस ने भाषायी कौशलों के मामले में पहली स्थिति को 'बिक्स' (BICS - Basic Interpersonal Communication Skill) और दूसरी स्थिति को 'कैल्प' (CALP - Cognitive Academic Language Proficiency) नाम दिया है। आईए कुछ अन्य स्थितियों में इस अंतर को देखने की कोशिश करते हैं। आप अभी

इस लेख को पढ़ रहे हैं तो जरा सोचकर बताइए कि इसे समझने के लिए हमें बिक्स के स्तर पर होने की ज़रूरत है या कैल्प के स्तर पर? बच्चा जब स्कूल में आता है तो उसकी विभिन्न विषयों की किताबें जिस भाषा में लिखी हैं, उन्हें समझने के लिए उसे किस स्तर पर होना चाहिए? नीचे कुछ स्थितियाँ दी गयी है, उनके सामने लिखिए कि उन स्थितियों में हमें बिक्स की ज़रूरत है या कैल्प की।

गतिविधि–4

सामने लिखिए कि इन स्थितियों में 'बिक्स' की ज़रूरत है या 'कैल्प' की।

- दो बच्चे खेलते हुए आपस में बातें कर रहे हैं
- आप भाषा की कार्यशाला में हैं और किसी मुद्दे पर चर्चा हो रही है
- एक बच्चा गणित के कुछ इबारती सवालों को पढ़कर समझ रहा है
- आप फोन पर अपने दोस्त से बात कर रहे हैं

4.2 बिक्स और कैल्प भाषा कौशलों में अंतर

कमिंस के मुताबिक बच्चे किसी भी नयी भाषा में, जो कि परिवेश में बोली जाती है या स्कूल में काम में ली जाती है, बुनियादी संप्रेषण कौशल (बिक्स) बहुत जल्दी ही हासिल कर लेते हैं यानि, लगभग 1 से 2 साल में। लेकिन उसी भाषा में अकादमिक दक्षता हासिल करने में कम से कम 5 से 7 साल लग जाते हैं। यही अकादमिक दक्षता स्कूल में सभी विषयों को सीखने के लिए आवश्यक होती है। कक्षा 4 और उसके बाद की कक्षाओं के पाठ कठिन अकादमिक भाषा में लिखे होते हैं और बच्चों से अपेक्षा होती है कि वे कठिन शब्दावली को समझे और अर्थ निर्माण के लिए तर्क, विश्लेषण, और उच्चस्तरीय भाषायी कौशलों का प्रयोग करें।

बच्चों के संदर्भ से परे औपचारिक भाषा और संज्ञानात्मक कौशल सिखाना स्कूल के शुरूआती सालों का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है। यह लक्ष्य शुरूआती कक्षाओं में केवल पाठ्यपुस्तक पढ़ने और लिखने से हासिल नहीं हो सकता। शुरुआत से ही मौखिक रूप में चर्चा, उच्चस्तरीय प्रश्न पूछना, बच्चों को सोचने और तर्क करने के लिए प्रोत्साहित करना और अच्छी शब्दावली का विकास करने से संज्ञानात्मक अकादमिक भाषायी कौशल (कैल्प) के विकास में मदद मिलती है। जिससे आगे जाकर बच्चे अकादमिक भाषा को लिखित रूप में समझने और ऐसे पाठों पर संज्ञानात्मक काम करने में सफल होते हैं।

आइए इन दोनों के अंतर को इस उदहारण के साथ समझे।

- "अरे यार ! गाड़ी आधा घंटा लेट है। (बिक्स)

- "यात्रीगण कृपया ध्यान दें। दिल्ली से चंडीगढ़ जाने वाली गाड़ी संख्या 2005, शताब्दी एक्सप्रेस, अपने निर्धारित समय से तीस मिनट देरी से आएगी।" (कैल्प)

इन दोनों वाक्यों के आधार पर हम यह अंतर देख सकते है :

	बोलचाल की भाषा (बिक्स)	**अकादमिक भाषा और उसको समझने की प्रक्रिया (कैल्प)**
1. संदर्भ	पूर्णतः संदर्भ आधारित	सीमित संदर्भ या संदर्भरहित
2. शब्दावली	रोज़मर्रा के परिचित शब्द सरल वाक्य	अपरिचित, तकनीकी या अमूर्त शब्द (जैसे–निर्धारित)
3. शैली और वाक्य संरचना	सरल वाक्य	जटिल या लंबे वाक्य जिनमें कई अवधारणाएं निहित हों।
4. संज्ञानात्मक माँग	बहुत कम, आसानी से समझ में आने वाली	पाठ को समझने के लिए सोचना, विश्लेषण करना, निष्कर्ष निकालना आदि कौशलों की आवश्यकता।

इस QR कोड को स्कैन करके आप बिक्स और कैल्प संबंधित पीपीटी देख सकते हैं।

> "अकादमिक भाषायी निपुणता (कैल्प) का विकास स्कूल में विभिन्न विषयों को समझने/सीखने के लिए आवश्यक है।"

5. लिखित भाषा और मौखिक भाषा की तुलना

हम जैसे ही मौखिक भाषा से लिखित भाषा की ओर आते हैं, एक नया और जटिल संसार खुल जाता है। मौखिक भाषा इंसानों के लिए नैसर्गिक है और हम इसे जैविक रूप से बोलने के लिए सक्षम हैं।

इंसानी समाज कम से कम एक लाख सालों (लगभग 10 हज़ार पीढ़ी) से बोली के ज़रिए विचारों का आदान–प्रदान करता आया है। इसकी तुलना में लिखित भाषा लगभग 5000 साल (100 पीढ़ी) पहले उपजी। यही नहीं, सारी भाषाओं ने लिखित रूप नहीं लिया। असल में, दुनिया की सारी भाषाओं में से 60 प्रतिशत भाषाएँ अभी तक मौखिक रूप में ही जीवित हैं।

ऊपर लिखे तथ्य से यह बात तो साफ़ होती है कि **बोलना ज़्यादा स्वाभाविक है और इंसानों को इस कौशल पर काफ़ी निपुणता भी होती है जबकि पढ़ने की प्रक्रिया उतनी स्वाभविक नहीं है।**

यह बात समझनी ज़रूरी है कि लिखित भाषा का मतलब केवल बोलने वाली भाषा को लिख देना भर नहीं होता। लिखित और मौखिक भाषा में कई तरह के अंतर हैं जिनको हम नीचे दे रहे हैं–

नीचे लिखे असली बातचीत के उदाहरण को देखें :

नीलू : तैयार ?

विमला : बस, एक मिनट!

नीलू : अरे, बस छूट जाएगी।

विमला : नहीं, अक्सर देर से आती है।

नीलू : तुम भी! इतनी लापरवाही अच्छी नहीं।

विमला : अच्छा भई... आती हूँ, गुस्सा न करो।

इसी बातचीत को लिखित भाषा में किसी कहानी के अंश के रूप में लिखें। हम शुरुआत यहाँ दे रहे हैं–

''नीलू और विमला जल्दी–जल्दी तैयार हो रही थी। विमला जब देर तक कमरे से तैयार हो कर नहीं निकली तब नीलू ने आवाज़ लगाकर पूछा–''तैयार हो गई''? इस पर विमला का उत्तर था ....

गतिविधि–5

ऊपर दिए गए दोनों स्वरूपों को देखकर लिखित व मौखिक भाषा की कुछ अलग–अलग विशेषताओं को नीचे टेबल में लिखें।

मौखिक भाषा	लिखित भाषा
------------------------------------	------------------------------------
------------------------------------	------------------------------------
------------------------------------	------------------------------------
------------------------------------	------------------------------------

असल में, लोगों की बातचीत को लिखना अक्सर बहुत कठिन होता है। जब हम लिखते हैं तो बोली गई बात सीधे नहीं लिख सकते। इसका कारण यह है कि मौखिक बातचीत में बोलने वाले आमने–सामने होते हैं, एक साझा संदर्भ होता है जिसे दोनों समझते हैं और इसीलिए संदर्भ के बारे में कुछ कहने की ज़रूरत नहीं होती।

यही नहीं, मौखिक बातचीत में लोग हाव–भाव, इशारों व शारीरिक संकेतों का इस्तेमाल करते हैं। (जैसे– हाथों को हिलाना, चलाना, चेहरे के उतार–चढ़ाव आदि)। लिखित भाषा को किसी तरह से प्रत्यक्ष भावों और इशारों को लिखित रूप में दिखाना होता है। जिस तरह के शब्द हम इस्तेमाल करते हैं, जैसे वाक्य बनाते हैं, ये सब लिखित रूप में और स्वतः उपजी बातचीत में भिन्न होते हैं। इसलिए लेखन का मतलब यह नहीं है कि हम केवल सुने हुए को लिख या पढ़ लें। लेखन वह है जब हम एक भिन्न प्रकार की 'लिखित' भाषा के ज़रिए संप्रेषण करें।

लिखित और मौखिक भाषा के कुछ फ़र्क़ इस प्रकार हैं–

- **उद्देश्य का फ़र्क़**

  बोलचाल की भाषा आम तौर पर ऐसी स्थिति में प्रयोग होती है जहाँ वक्ता और श्रोता आमने–सामने हैं, जबकि लिखित भाषा में लेखक और पाठक आमने–सामने नहीं होते। लिखित भाषा समय और स्थान की सीमाओं के पार भी संप्रेषण का ज़रिया होती है। मौखिक भाषा प्रत्यक्ष स्थिति या संदर्भ का काफ़ी ज़्यादा इस्तेमाल करती है जबकि लिखित भाषा अक्सर संदर्भ मुक्त होती है।

- **शैली का फ़र्क़**

  मौखिक भाषा अनौपचारिक बातचीत के साँचे में ढली होती है, वहीं लिखित भाषा की शैली ज़्यादा औपचारिक होती है। लिखित भाषा की शब्दावली ज़्यादा साहित्यिक होती है, जिसमें ज़्यादा मानक शब्दों का प्रयोग होता है। लिखित पाठ में शब्द और सूचनाएँ ज़्यादा घनी होती है और वाक्य संरचना भी अधिक औपचारिक होती है जो संदर्भ का विवरण भी देती है। आइए, एक उदाहरण देखें–

  मौखिक भाषा – ''अरे, कितना अंधेरा है!''

  लिखित भाषा – ''जब वे दोनों कमरे में घुसे तो उन्होंने पाया कि कमरे में घना अंधेरा था। उनमें से एक चिल्लाया ''अरे, कितना अंधेरा है!'' ध्यान दें कि यहाँ पर पूरी स्थिति और संदर्भ का शब्दों में वर्णन करना ज़रूरी हो जाता है।

  कई बच्चों को स्कूल आने से पहले किसी रूप में लिखित भाषा के बारे में कोई अनुभव नहीं मिलते। जैसे– उन्हें कहानियाँ पढ़कर नहीं सुनाई गई होतीं। ऐसे में उन्हें स्कूल में लिखित सामग्री को समझने में कठिनाई होती है, क्योंकि वे लिखित भाषा की प्रकृति नहीं जानते। इसीलिए स्कूल के प्रारंभिक महीनों में इन बच्चों को लिखित भाषा सुनने के बहुत अवसर मिलने चाहिए, जैसे कहानियों की किताब पढ़कर सुनाना।

इकाई–2
साक्षरता क्या है?

1 साक्षरता क्या है?

नीचे हम एक साक्षर व्यक्ति के कुछ वर्णन दे रहे हैं। आप अपने अनुसार इनमें से किसको साक्षर मानेंगे?

1. एक व्यक्ति जो अक्षर और शब्द लिख या पढ़ सकता है।
2. एक व्यक्ति जो लिख व पढ़ सकता है और साथ ही लिखी हुई सामग्री का अर्थ निकाल सकता है।
3. वह व्यक्ति जो अलग–अलग संदर्भों के लिए लिखी हुई सामग्री का प्रयोग कर सकता है। इस सामग्री के आधार पर चीज़ों को पहचानने, समझने, व्याख्या करने, रचने, विचार व्यक्त करने और गणना करने की क्षमता रखता है।
4. जो व्यक्ति लगातार सीखने के लिए लिखित सामग्री का इस्तेमाल करके अपने उद्देश्यों को पूरा कर सकता है और अपने ज्ञान व सामर्थ्य को बढ़ा सकता है, साथ ही अपने समुदाय और व्यापक समाज में भागीदारी के लिए लिखने–पढ़ने का प्रयोग कर सकता है।

परपंरागत रूप से लोग केवल पहले या दूसरे वर्णन को ही साक्षरता की परिभाषा मानते रहे हैं। लेकिन आज साक्षरता को ज़्यादा व्यापक रूप से देखा जाता है। साक्षरता को सीखने, सोचने, सशक्तिकरण और समाज में प्रभावी भागीदारी के लिए एक महत्वपूर्ण औजार माना जाता है। साक्षरता जीवन रूपांतरित कर सकती है। सच्ची साक्षरता में 'शब्द को पढ़ना' और 'दुनिया को पढ़ना' शामिल है। साक्षरता के बारे में समझने वाली जो सबसे महत्वपूर्ण बात है, वह यह कि साक्षरता सोचने और तर्क करने का भी माध्यम है।

सोचना, तर्क करना, विश्लेषण कर पाना, सुनने, बोलने, पढ़ने, और लिखने की सभी प्रक्रियाओं का अभिन्न अंग है।

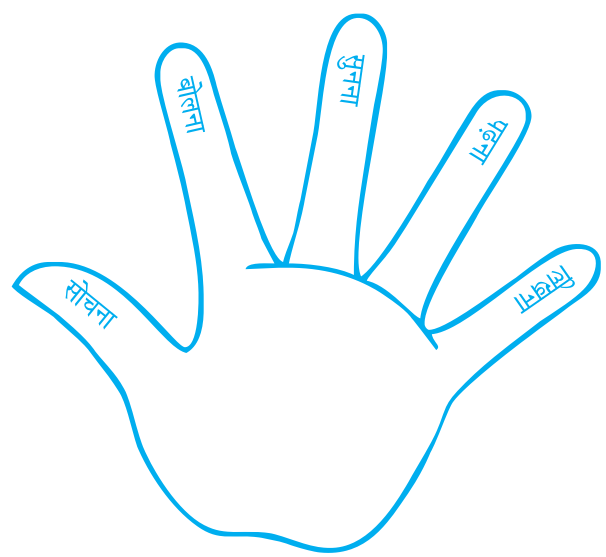

साक्षरता के आयाम
स्रोत : ऑर्गेनाइजेशन फॉर अर्ली लिट्रेसी प्रमोशन (ओईएलपी)

आकृति–2

1.1 कक्षा 2 तक साक्षरता विकास

अच्छे साक्षरता कौशल (कक्षा 2 के अंत तक) का अर्थ है :

- बच्चे सोचते और अच्छी तरह समझते हुए, एक सरल कहानी को धाराप्रवाह (सटीक और ठीक–ठीक गति से) पढ़ने में सक्षम होते हैं।
- मौखिक रूप से अपने आप को स्पष्ट ढंग से अभिव्यक्त (सोचकर, तर्कपूर्ण तरीके से) कर सकते हैं।
- किसी चित्र, विषय या कहानी के प्रश्नों को अपने शब्दों में 3.4 वाक्य में लिख सकते हैं।

2. भाषा विकास के तीन घटक

इस इकाई में हम भाषा विकास के तीन मुख्य घटकों– मौखिक भाषा विकास, पठन और लेखन के बारे में बात करेंगे–

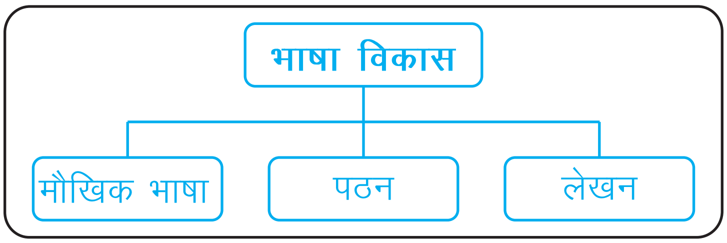

आकृति–3

2.1 मौखिक भाषा विकास

2.1.1 मौखिक भाषा विकास क्या है?

इस खंड की ऑडियो सुनने के लिए इस QR को स्कैन करें।

अक्सर स्कूलों में बच्चों की मौखिक भाषा विकसित करना ज़रूरी नहीं माना जाता। यह मान लिया जाता है कि बोलना और सुनना तो बच्चे पहले से ही जानते हैं। लेकिन मौखिक भाषा का विकास असल में केवल बोलने और सुनने की क्षमता से कहीं ज़्यादा होता है। आइए, देखें! कैसे –

(I) **सुने हुए पर प्रतिक्रिया देना** : ध्यान दें कि सुनना एक सक्रिय कार्य हो सकता है, जब बच्चे बात को

ध्यान से सुनें, उसे समझने की कोशिश करें, याद रखें कि क्या कहा गया है और बात पर अपनी टिप्पणी, राय या प्रतिक्रिया दे सकें।

(II) **समृद्ध शब्दावली :** समझते हुए सुनने और अपनी बात को अच्छी तरह कहने के लिए अच्छी शब्दावली बहुत ज़रूरी होती है। बच्चों की मौखिक भाषा के अच्छे विकास के लिए उनका शब्द भंडार लगातार समृद्ध होते रहना चाहिए।

(III) **दोबारा सुनाना या बताना :** किसी कहानी, घटना या अनुभव को, दूसरों को अच्छी तरह बताने के लिए केवल शब्द ही नहीं चाहिए। अच्छे वाक्य बनाना, उन्हें सही क्रम में ढाल पाना और समझाते हुए कह पाने का कौशल बोलने को कहीं ज़्यादा प्रभावी बनाते हैं।

(IV) **सोचने के लिए बातचीत का प्रयोग :** एक कुशल शिक्षार्थी सहपाठियों से पूछकर या संवाद करके अपनी समझ, विचार व जानकारी को अधिक बेहतर कर सकता है।

2.1.2 प्रारंभिक कक्षाओं में मौखिक भाषा विकास का महत्व

आइए, ज़रा नज़र डालें कि मौखिक भाषा का विकास आवश्यक क्यों है ?

(I) जैसा कि पहले दर्शाया गया, मौखिक भाषा में यह सब शामिल हैं– दूसरों से अपनी बात समझकर, स्पष्ट रूप से कह पाना और दूसरे की बात सुनकर समझ सकना। यदि समझ ना आए तो दूसरों से स्पष्टीकरण माँगना। ज़ाहिर है कि कक्षा के बड़े समूह में दूसरे बच्चों व अध्यापक से संवाद के लिए यह क्षमता बहुत महत्वपूर्ण है। आपने बहुत से बच्चे ऐसे देखे होंगे जो ज़्यादा लोगों के बीच सहमे और चुपचाप रहते हैं या अपनी बात अटकते हुए, केवल टुकड़ों में बोलते हैं।

(II) जिन बच्चों के घर की भाषा स्कूल की मानक भाषा से भिन्न है, उनके लिए मानक भाषा की समझ विकसित करना अति आवश्यक है, जिसके बिना उनकी शिक्षा आगे बढ़ ही नहीं पाएगी।

(III) स्कूल में अकादमिक भाषा का प्रयोग काफ़ी होता है, जिसे कक्षा में बातचीत से ही विकसित किया जा सकता है। इसमें जटिल वाक्यों की संरचना, औपचारिक शब्दावली आदि शामिल हैं।

(IV) सोचने और तर्क करने का कौशल बातचीत से ही विकसित होता है। इसमें समझ के कई उच्च–स्तरीय कौशल शामिल हैं। जैसे– किसी तर्क–वितर्क या स्थिति को समझकर निष्कर्ष निकालना, बहुत–सी बातों में से मुख्य विचार को पहचान सकना, सुनी हुई बात के बारे में अपनी राय बनाना और व्यक्त करना आदि। ये सभी क्षमताएँ पहले मौखिक स्तर पर विकसित होती हैं और बाद में, पठन में काम आती हैं।

(V) किसी भी विषय के बारे में सामान्य ज्ञान और अमूर्त अवधारणाएँ आदि भी पहले मौखिक बातचीत से ही विकसित होती हैं, जिनकी मदद से बाद में पढ़ते हुए समझना संभव हो पाता है।

ऊपर दिए गए सभी कारणों की वजह से **मौखिक भाषा का विकास ही असल में वह नींव है जिस पर पढ़ने और लिखने की क्षमता विकसित होती है। अगर प्रारंभिक कक्षाओं में मौखिक भाषा का दृढ़–विकास हो जाए तो यह अन्य सीखने की प्रक्रियाओं के लिए एक ठोस नींव बनती है।** इसलिए प्रारंभिक कक्षाओं में बच्चों को सुनकर समझने और बोलने के पर्याप्त अवसर मिलने चाहिए। यही नहीं, यह भी बहुत ज़रूरी है कि बच्चों को शुरुआत में उसी भाषा में बात करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए, जिसे वे स्कूल में आने से पहले से जानते हैं। इस पर हम आगे के मॉड्यूलों में और विस्तार से चर्चा करेंगे।

मौखिक भाषा के विकास के फ़ायदे हम चित्र द्वारा इस प्रकार दिखा सकते हैं–

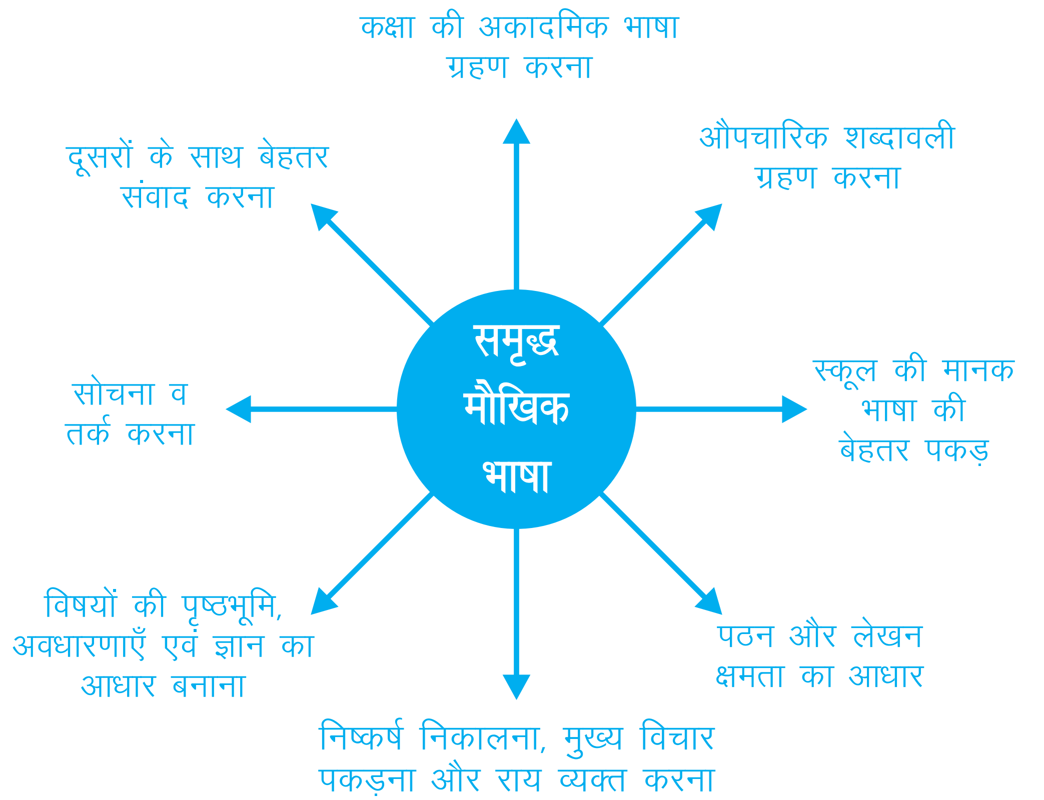

आकृति–4

2.1.3 पढ़ना सीखना बोलना सीखने से कैसे भिन्न है?

हमने पहले भी इंगित किया था, छोटे बच्चों में बोलना सीखने की आश्चर्यजनक, लगभग जादुई जैसी क्षमताएँ हैं। हर माँ–बाप अपने बच्चे का पहला शब्द या वाक्य सुनकर हैरान रह जाते हैं। केवल यही नहीं, मिश्रित भाषा वाले परिवेशों में या अजनबी भाषाओं के बीच बच्चे अपने माँ–बाप से बेहतर भाषा सीखने की क्षमता दिखाते हैं। और तो

और, प्रवासियों के बच्चे भाषाओं के मिश्रण को सुनते–सुनते नई बोलियों को गढ़ने तक की क्षमता दर्शाते हैं। इस सब से यह स्पष्ट होता है कि बोलने की क्षमता कुदरती और जैविक ढंग से इंसानों को हासिल है। क्या यही बात हम लिखित भाषा के बारे में भी कह सकते हैं? **असल में लिखित भाषा जैविक ढंग से नहीं उपजी, बल्कि केवल कुछ मानव समुदायों में सचेत रूप से गढ़ी गई।** एक तरह से मनुष्य को जो नैसर्गिक रूप से मिला, उसका इस्तेमाल करके द्वितीय चरण के रूप में कृत्रिम लिपियाँ बनाई गई। **अगर बोलना एक लाख साल से भी पहले उपजा, तो लिपि लगभग पाँच हज़ार सालों के आसपास बनाई गई। जहाँ बोलना हमारे लिए आसान और सहज है, उसे लिपि में बाँधना कहीं ज़्यादा कठिन व जटिल है।**

लिपि पढ़ने या लिखने का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा होता है – लिपि चिह्नों को पहचान सकना या 'डिकोड' कर सकना। **डिकोडिंग का अर्थ है, छोटे–छोटे लिपि चिह्नों (जैसे अक्षर) को देखते ही उनकी ध्वनियों का उच्चारण कर पाना और उन्हें जोड़–जोड़ कर शब्द बोल पाना।** हम जानते हैं कि बोली की हर ध्वनि और लिपि में एक संकेत चिह्न का अटूट और नियमबद्ध रिश्ता होता है। लिपि समझ पाना ऐसा ही है जैसे किन्हीं गुप्त संकेतों में छिपे हुए शब्द और अर्थों को खोजना। असल में 'डिकोड' शब्द अंग्रेज़ी में दिए संकेतों को खोलने से ही उपजा है। यह कितना कठिन है, इसे समझने के लिए नीचे दिए अभ्यास को करके देखें। (ध्यान दें कि अभ्यास में संकेत चिह्नों की संख्या वर्णमाला से कहीं कम है।)

गतिविधि–6

नीचे हिंदी के कुछ वर्णों, अक्षरों के लिए कुछ दूसरे चिह्न दिए गए हैं, इनको ग़ौर से पढ़ें और नए चिह्नों को मिलाकर शब्द पढ़ने की कोशिश करें।

ध्वनि	आ	ठ	ड	ए	ओ	क	च	ट	ल
चिह्न	I	II	III	IIII	𝍸	❑	ᛖ	ω	Φ

ध्वनि	य	र	म	ल	प	ज	त	ग
चिह्न	≠	♮	Ω	θ	>	<	O	∝

अब बिना चिह्न कुंजी देखे नीचे लिखे शब्दों को डिकोड करें।

II 𝍸 ❑ ♮ ....

❑ 𝍸 ≠ θ I ....

O Ω I ᛖ I ....

इस कठिनाई से उपजने वाली प्रमुख समस्या यह है कि जहाँ हमें बोलना सिखाना नहीं पड़ता, लिखने–पढ़ने के लिए सभी बच्चों को अच्छे शिक्षण की ज़रूरत होती है। शिक्षण के बावजूद भी पढ़ना–लिखना सीखने में बहुत बच्चे पीछे छूट जाते हैं।

इसलिए शिक्षकों और शिक्षा के अन्य लोगों को यह समझना बहुत ज़रूरी है कि बोलने और लिखने/पढ़ने के बीच क्या समानताएँ हैं और क्या असमानताएँ। बिना अच्छी तरह यह समझे, बच्चों के सामने आने वाली साक्षरता संबंधी भारी कठिनाइयों को हम नहीं समझ पाएँगे।

2.2 पढ़ना किसे कहते हैं?

साक्षरता की व्यापक परिभाषा के बाद अब हम पठन की प्रक्रिया को थोड़ा और ध्यान से देखेंगे। किसी पाठ को पढ़ना, उससे अर्थ निकालने की या अर्थ निर्माण की इस प्रक्रिया में पाठक का दिमाग पूरी तरह सक्रिय रहता है। आइए, एक अभ्यास के ज़रिए इसे समझने की कोशिश करें।

दिए गए पैरा को पढ़ें और कल्पना करें कि कई बच्चे इसे पढ़ रहे हैं।

''तभी किसी ने ख़बर दी कि बहुत दूर जंगल के किसी कोने की माँद में कोई बहुत ही बूढ़ा–सियार वैद्य रहता है और आस–पास उसकी बड़ी शोहरत है। वह किसी से कुछ लेता–देता भी नहीं है। फौरन राजा के चर दौड़ गए और उस वैद्य को ले आए। बड़ी गंभीरता से नाक पर चश्मा खिसका कर वैद्य ने राजा की हालत देखी। वह देखते ही राजा की असलियत समझ गया। लोमड़ी को एक तरफ ले जाकर उसने कुछ समझाया। लोमड़ी की समझ में कुछ भी नहीं आया, लेकिन उसने फौरन ही सेवक दौड़ाए कि जैसे भी और जहाँ से भी हो, कोई मरा हुआ शेर या भेड़िया लाया जाए । लोगों ने समझा कि शायद उसके किसी हिस्से की दवा बना कर राजा को खिलाई जाएगी। सारा राज–काज ठप्प हो गया था और लोग जल्दी–से–जल्दी राजा की समस्या हल कर डालना चाहते थे।''

जब बच्चे इसे समझकर पढ़ते हैं तो केवल यही काफ़ी नहीं कि वे इसमें दी गई जानकारी को सिर्फ़ याद कर लें, और पाठ के अंत में दिए सवालों का जवाब दे सकें। पाठ को समझने का मतलब है कि बच्चे के मन में सोचने की प्रक्रिया लगातार चलती रहे। पाठ समझने के विभिन्न स्तर था पहलुओं के कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं–

(I) कहानी के प्रथम स्तर की समझ तब बनती है जब बच्चे सभी शब्दों और वाक्यों के अर्थ समझ लेते हैं। जैसे 'तभी किसी ने ख़बर दी कि बहुत दूर एक जंगल के किसी कोने की माँद में कोई बहुत ही बूढ़ा सियार वैद्य रहता है'। पहले स्तर की समझ बनती है कि इस वाक्य का अर्थ क्या है– एक सियार जो कि बूढ़ा था, वह जंगल के कोने में रहता था, और वह वैद्य था, मतलब बीमारी का इलाज करता था। इस तरह की समझ को **शाब्दिक या स्थानिक समझ** कहते हैं, जिसके तहत बच्चे कहानी के अलग–अलग शब्दों या अलग–अलग वाक्यों को समझ जाएँ।

(II) दूसरे स्तर की समझ वह है जिसमें बच्चे पढ़े गए पाठ के विभिन्न वाक्यों अंशों को जोड़ते हुए उसे अपने पूर्व ज्ञान से जोड़कर, निष्कर्ष निकालते हुए एक पूरी समझ बनाते हैं ।जैसे– राजा की तबियत खराब थी और उसको ठीक करने के लिए एक प्रसिद्ध वैद्य बुलाया गया, जिसने राजा को देखा और लोमड़ी को कुछ करने को कहा। बच्चे साथ में यह भी सोचने लगेंगे कि आगे क्या होने वाला है– मरा हुआ शेर या भेड़िया आख़िर, कौन लाएगा? आख़िर, उससे राजा कैसे ठीक होगा? क्या सियार वैद्य वाकई में राजा को ठीक कर देगा? इस तरह की समझ को **सार्विक समझ** कहा जाता है, जिसमें पूरे पाठ/कहानी का सार समझना और अपनी प्रतिक्रिया दे पाना भी शामिल है।

यह भी बहुत ज़रूरी है कि बच्चे अलग शब्दों, वाक्यों आदि को एक साथ रखकर यह समझ सकें कि पूरा पाठ या कहानी क्या कहने की कोशिश कर रही है। इस तरह की व्यापक समझ को 'सार्विक' समझ कहते हैं। इस प्रक्रिया में बच्चे अपने पूर्व ज्ञान और दैनिक जीवन के अनुभवों का भी प्रयोग करते हैं, जिसे विशेषज्ञ 'विश्वज्ञान' कहते हैं।

अक्सर बच्चे किसी पाठ को पढ़ते हुए उसमें निहित सभी भावों को महसूस करते चलते हैं, जैसे, वैद्य सियार के मिलने पर खुशी या लोमड़ी द्वारा मरे हुए शेर या भेड़िया माँगने पर हैरानी और मन में प्रश्न उठना। इस तरह से पढ़ी हुई कहानी सुनते हुए उसके साथ अपना रिश्ता बनाते चलते हैं, उसे और गहराई से समझने के लिए कुछ निष्कर्ष निकालते जाते हैं। ये निष्कर्ष पात्रों पर भी हो सकते हैं (जैसे– लोमड़ी बहुत चालाक थी), घटनाओं पर भी हो सकते हैं (जैसे– बहुत बढ़िया, रोचक या बेकार कहानी थी)। साथ ही बच्चे जब अर्थ निकालते हैं, वे लगातार अपने पूर्व ज्ञान का इस्तेमाल करते चलते हैं (जैसे– राजा, वैद्य, जंगल, शोहरत, राजकाज आदि के बारे में)। साथ ही वे अनुमान लगाते चलते हैं कि आगे क्या होने वाला है। कुछ बच्चे सोच सकते हैं कि राजा ठीक हो जाएगा, जबकि कुछ का मानना हो, शायद ऐसा नहीं हो सकता। अतः हर बच्चा अपने अनुसार अलग–अलग अर्थ निकालेगा और मानसिक छवियाँ बनाएगा। **इसलिए पठन केवल सक्रिय ही नहीं, बल्कि एक व्यक्तिगत व ऐच्छिक प्रक्रिया भी है जिसमें पाठक की समझ, रुचि और इच्छा भाामिल है।** इस मॉड्यूल को पढ़ते हुए आप स्वयं भी ये सारी प्रक्रियाएँ कर रहे होंगे।

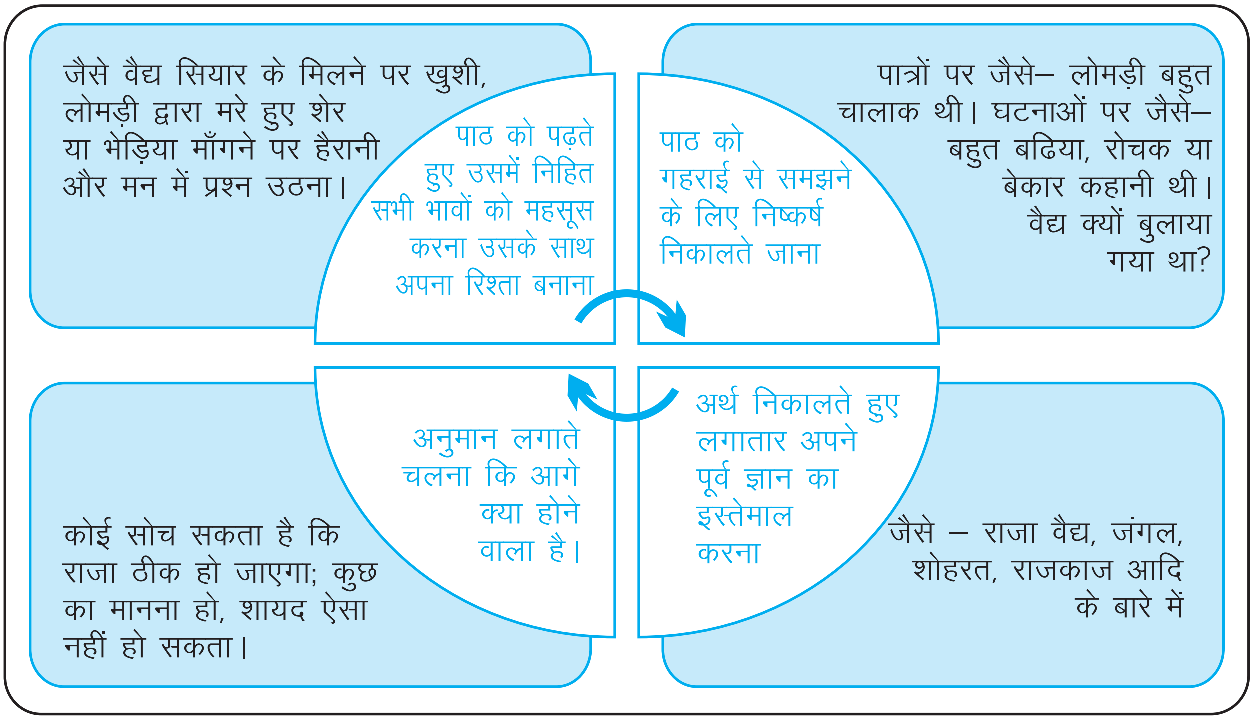

आकृति–5

अगर बच्चा पाठ के विषय के बारे में, उसमें आए पात्रों, स्थानों, वस्तुओं, अवधारणाओं आदि के बारे में पहले से कुछ जानता है तो उसे पाठ का अर्थ निकालने में बहुत मदद मिलती है। उदाहरण के लिए, एक छोटा बच्चा, जिसने कभी रेलगाड़ी नहीं देखी है, उसके लिए रेलयात्रा का पाठ समझना मुश्किल होगा। यही नहीं, बच्चे, अपने पिछले ज्ञान और अनुभवों के अनुसार पाठ की अलग और विशिष्ट समझ बनाते हैं। कोई भी नया ज्ञान अलग–अलग बच्चों द्वारा अलग ढंग से समझा जाता है, क्योंकि उनके पिछले अनुभव इस समझ पर भारी असर डालते हैं। इसलिए पाठ इस तरह प्रस्तुत होने चाहिएँ जिससे बच्चे उसके साथ खुद को जोड़ सकें, राय बना सकें, निष्कर्ष निकाल सकें और ज़्यादा आगे सोचने के लिए प्रेरित हों।

मॉड्यूल 3 में जब हम सीखने के व्यापक सिद्धांतों की बात करेंगे, तब यह पहलू अधिक स्पष्ट हो सकेगा।

समझ कर पढ़ने का मतलब केवल यह नहीं है कि बच्चे सिर्फ़ किसी पाठांश, कहानी या अध्याय के आख़िर में दिए गए सवालों के ज़वाब देने की क्षमता हासिल कर लें। इसका आशय सोचने की लगातार चलने वाली प्रक्रिया से होता है। इसलिए पठन केवल सक्रिय ही नहीं, बल्कि एक व्यक्तिगत व ऐच्छिक प्रक्रिया भी है जिसमें पाठक की समझ रुचि और इच्छा शामिल है।

2.2.1 पठन के दो आयाम

जब बच्चे, हम भी, किसी पाठ को पढ़ते हैं तो पढ़ने के दौरान दो प्रकार की प्रक्रियाएँ साथ–साथ चलती हैं– (i) शब्द पहचान प्रक्रियाएँ (ii) भाषायी समझ की प्रक्रियाएँ

(i) शब्द पहचान प्रक्रियाएँ

किसी पाठ का अर्थ समझने के लिए ज़रूरी है कि बच्चें लिखे हुए शब्दों को पहचानने और समझने में सक्षम हों। शब्दों को पहचानने के कई तरीके होते हैं, इनमें से प्रमुख तरीके नीचे दिए गए हैं–

- **डिकोडिंग** : किसी शब्द को देखकर उसमें जो अलग–अलग चिह्न हैं उनको पहचान कर और जोड़कर उनका उच्चारण करना और फिर उस शब्द का अर्थ पहचानना। पढ़ना सीखने की शुरुआत में एक–एक चिह्न को पहचान कर उससे संबंधित ध्वनि पहचाननी पड़ती है। मान लीजिए कोई बच्चा 'दुकान' शब्द को पढ़ना चाहता है। सबसे पहले उसे चिह्नों को पहचान कर उनकी ध्वनियाँ पहचाननी पड़ेंगी।

  दु की ध्वनि **का** की ध्वनि **न** की ध्वनि

  और फिर इन्हें जोड़कर दुकान शब्द का उच्चारण करना

  इस प्रक्रिया को डिकोडिंग कहा जाता है।

जब बच्चे शुरुआत में पढ़ना सीख रहे होते हैं, उस समय डिकोडिंग के द्वारा शब्द पहचानना सबसे महत्वपूर्ण रणनीति होती है।

- **शब्द को इकट्ठा पहचानना या शब्द को तस्वीर की तरह पढ़ना (दृश्य शब्द)** : ध्वनि की हर छोटी इकाई पहचानने के बजाय यह पूरे शब्द को आकृति की तरह पहचानने का सीधा रास्ता है। इस तरीके में पूरा शब्द एक तस्वीर के रूप में देखकर पाठक के दिमाग द्वारा मौजूदा आंतरिक शब्दकोष से मिलाया जाता है।यह रास्ता तभी संभव हो पाता है जब किसी शब्द को बार–बार डिकोड करके इतनी बार पढ़ लिया गया हो कि वह एक तस्वीर की तरह दिमाग में बस गया हो। असल में ज़्यादातर कुशल वयस्क पाठकों के लिए शब्दों की बहुत बड़ी संख्या 'शब्द तस्वीरें' या 'दृश्य शब्द' बन चुके होते हैं और इसलिए वे बहुत तेज़ी से पढ़ सकते हैं। शब्द को बिना तोड़े पढ़ने से पठन की गति भी तेज़ होती है। हो सकता है हमारे लिए अंग्रेज़ी भाषा में 'शब्द–तस्वीरों' की संख्या हिंदी से कम हो और हमें कई शब्द डिकोडिंग के रास्ते से पढ़ने पड़ते हों।

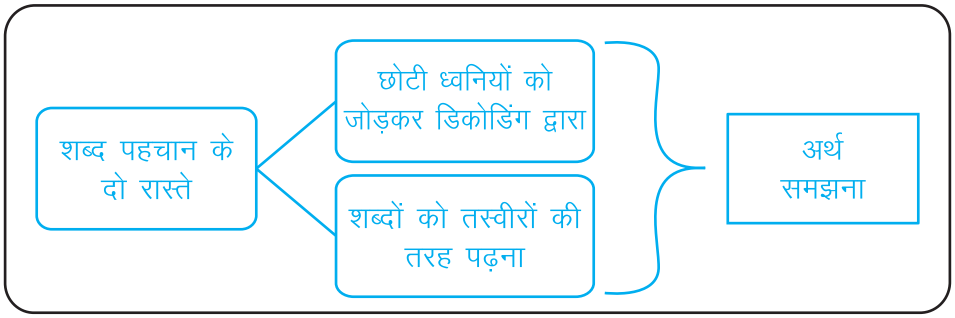

आकृति–6

आँख की सक्रियता (एक शब्द पर रुकना और फिर हटकर दूसरे शब्द पर ठहरना) पर हुए शोध दर्शाते हैं कि आँख हर शब्द पर एक पल (एक सेकेंड से भी बहुत कम) समय के लिए ही ठहरती है। अगर हम शब्दों को सिर्फ़ डिकोड करके (हिज्जे करके ध्वनियों को जोड़कर शब्द पढ़ना) पढ़ते तो छोटे शब्दों (कम अक्षर वाले) को पहचानने में लंबे शब्दों से कम समय लगना चाहिए। पर शोध दिखाते हैं कि ऐसा नहीं है और हमारी (जो पाठक धाराप्रवाह रूप से पढ़ सकते हैं) आँखें छोटे–बड़े शब्दों पर एक ही समय के लिए ठहरती है। यह तो तभी हो सकता है जब एक कुशल पाठक असल में शब्द को तस्वीर के रूप में पहचानने वाला मार्ग ज़्यादा से ज़्यादा अपनाने लगता है।

- **संदर्भ और वाक्य संरचना के आधार पर शब्द का अनुमान लगाना**

अनुमान भी दो तरह से लगाया जा सकता है–

– **कुछ शब्दों के लिए 1–2 अक्षर देख कर हम पूरे शब्द का अनुमान लगा सकते हैं।**

इसे समझने के लिए नीचे लिखे पैरा को पढ़ने की कोशिश करें।

'हामरा मष्तसिक बहतु शदानार क्षतामओं से सुज्सतिज है। हम अन्तय्त तेज गति से पढ़ेत हैं और हिज्जे गलत करेन पर भी सलयूहित से पढ़ सकते हैं, यदि हम कुशल पाकठ हैं। इसेक कराणों का विल्णेषण करान बिलुकल आसन नहीं है, पर सबूत समाने दृश्टिचगोर है। केवल मपत्त्वूहर्ण यह है कि शब्द के पहेल और आखीरि अक्षरों में बहतु बलादव न हो। इसान्नी मतिष्सत में अगिननत काकोशिओं और उनेक अतसंर्म्बधों का व्यपाक जाल है।'

– **वाक्य की संरचना और वाक्य से उभरते अर्थ के आधार पर हम किसी शब्द को बिना पढ़े अनुमान लगाने लगते हैं।**

कई शोधों ने दर्शाया है कि जब पाठ का संदर्भ और अर्थ पाठक को समझ में आता है, तो वह वाक्य में आगे आने वाले शब्दों का अनुमान लगाने लगता है। इस बात को समझने के लिए नीचे दिए उदाहरण को देखें :

सियार की कहानी के इस वाक्य पर ध्यान दें, ''जंगल के किसी कोने की माँद में कोई बहुत ही बूढ़ा सियार वैद्य रहता था।'' जब कोई पाठक इस वाक्य को पढ़ता है ''जंगल के किसी कोने की माँद में कोई बहुत ही बूढ़ा....'' तो पढ़ते समय आगे के शब्द का अनुमान कुछ हद तक लगा सकता है। यह जंगल में, 'मांद' में है, तो संदूक या मेज़ जैसी मानव निर्मित वस्तु नहीं होगी और क्योंकि 'बूढ़ा' है तो जीव ही होगा, चट्टान, पत्थर जैसी निर्जीव चीज़ नहीं। इस प्रकार संदर्भ ने अगले शब्द 'सियार' के लिए अनुमान को काफ़ी सीमित कर दिया है और पाठक आगे किसी जंगली जानवर की ही उम्मीद करेगा। 'सियार' का पहला अक्षर 'सि' पढ़ते ही दिमाग जल्दी से सियार का अनुमान लगा सकता है। लेकिन अगला शब्द 'वैद्य' किसी भी तरह से अपेक्षित नहीं है। ऐसे में पाठक इसे पूरे ध्यान से, रुककर पढ़ेगा। इसके बाद आने वाले दो शब्द 'रहता है' पूरी तरह अपेक्षित हैं, क्योंकि 'माँद में' ने इनका संदर्भ बना दिया है, तो पाठक इसे अनुमान से अपने भाषा ज्ञान से ही तय कर सकता है और जल्दी पढ़ सकता है।

कई बार उस अनुमान की पुष्टि भी करनी पड़ती है। शुरुआती कक्षाओं के बच्चों के लिए, जो लिखित भाषा से बहुत परिचित नहीं हैं, इस प्रकार का अनुमान लगाना बहुत कठिन होता है। संदर्भ से अनुमान लगाने की क्षमता केवल उन बच्चों में हो सकती है, जिन्हें स्कूल आने से पहले लिखित भाषा के बहुत सारे अनुभव मिले हों। अनुमान पठन तभी संभव हो पाता है जब बच्चे प्रवाहपूर्वक पढ़ने लगें और ज़्यादा से ज़्यादा परिचित शब्द पाठ में आने लगें। **फिर भी अध्ययन दर्शाते हैं कि दस प्रतिशत से ज़्यादा आगे आने वाले शब्दों का अनुमान नहीं लगाया जा सकता।**

शोध के अनुसार, यदि हम अनुमान लगाते हैं, तब भी, हम किसी भी शब्द को बिना देखे आगे नहीं बढ़ते। हर शब्द पर आँख टिकती है और कुशल पाठक हर शब्द पर से नज़र गुज़ारते हैं। शायद ही, कोई शब्द छोड़ा जाता हो। हर ऐसे शब्द पर जो पूरी तरह अपेक्षित हो, आँख बहुत थोड़ी देर ठहरती है। असल में आँख हर शब्द से कोई दृष्टि आधारित सुराग ज़रूर पकड़ती है।

डिकोडिंग सीखना और शब्दों को तेज़ी से एवं सही पढ़ना कुशल पठन की क्षमता विकसित करने के लिए अनिवार्य है। शब्दों को सही पढ़ना और लगभग स्वतःस्फूर्त तरीके से पढ़ना प्रवाहपूर्वक पठन के विकास के लिए ज़रूरी होता है। यदि डिकोडिंग सही और स्वतःस्फूर्त है तो पाठक लगभग पूरा ध्यान पढ़े जा रहे पाठ के अर्थ को समझने पर लगा सकते हैं। इसके पर्याप्त शोध प्रमाण हैं कि स्कूल के शुरुआती वर्षों में बढ़ती हुई प्रवाहपूर्वक डिकोडिंग का सीधा संबंध को 'अर्थ को समझने की क्षमता में सुधार' से होता है।

शब्द पहचान की रणनीतियाँ

शब्द पहचान की प्रक्रिया में ये रणनीतियाँ समानांतर काम में ली जाती हैं–

- परिचित शब्दों को, जिन्हें बच्चे कई बार पढ़ चुके होते हैं, उन्हें वे विभाजित करके डिकोडिंग द्वारा नहीं

पढ़ते हैं, बल्कि पूरे शब्द को ही एक साथ पहचान कर पढ़ते हैं।

- जब कोई नया/अपरिचित शब्द आता है तो बच्चे उसको डिकोड करके अर्थात प्रत्येक चिह्न को पहचानकर उसकी ध्वनि को अन्य ध्वनियों से जोड़कर पढ़ते हैं।
- जब बच्चों को कोई ऐसा शब्द मिलता है जिसका वे जल्दी से अनुमान लगा सकते हैं, तब वे उसे डिकोड करने के बजाय अनुमान लगाकर जल्दी से उच्चारित कर देते हैं।
- दिमाग इन रणनीतियों का एक साथ (समानांतर) और आवश्यकता के अनुसार प्रयोग करता है ।
- जब बच्चे शुरुआत में पढ़ना सीख रहे होते हैं, उस समय डिकोडिंग की पद्धति से शब्द पहचानना सबसे महत्वपूर्ण रणनीति होती है।
- जब बच्चों को पढ़ने के कई अवसर मिलते हैं, तो वे बहुत से शब्दों के लिए पूरा शब्द एक साथ (शब्द तस्वीर) पढ़ने का रास्ता अपनाते हैं। ये वे शब्द हैं जिन्हें वे पहले 6.8 बार डिकोड करके पढ़ चुके हैं।

(ii) भाषायी समझ की प्रक्रियाएँ

कुशल पठन का दूसरा आयाम है– भाषा की गहन समझ बना पाना। भाषा की समझ बनाने और पढ़ कर अर्थ गढ़ पाने की क्षमता में कई कौशलों का योगदान होता है:

- किसी पाठ को समझने के लिए हमें उसकी विषयवस्तु के बारे में पूर्व ज्ञान या अनुभव होना चाहिए ।
- पाठ में आने वाले शब्दों का अर्थ पहले से मालूम होना या समझ पाना बहुत ज़रूरी है। इसलिए बच्चों के शब्द भंडार का विकास होते रहना चाहिए, जिससे पाठों/अध्यायों में उन्हें ज़्यादातर परिचित शब्द पढ़ने के लिए मिलें।
- किसी पाठ को पढ़कर अर्थ और निष्कर्ष निकाल पाने के लिए पाठक को सक्रिय रूप से, अपनी चिंतन और तर्कशक्ति का इस्तेमाल करना होता है।
- यह उच्च–स्तरीय क्षमता बच्चों में शुरू से ही, मौखिक भाषा के काम के साथ विकसित करने का प्रयास होते रहना चाहिए।
- वाक्यों की संरचना और पाठ की संरचना की समझ भी भाषायी समझ का ही एक अंग है, और पाठ को समझने के लिए आवश्यक है। पाठ में उपमा, मुहावरे जैसे भाषायी अलंकारों की समझ भी बहुत ज़रूरी है।
- कहानी का घटनाक्रम कैसा होता है? जानकारी वाले पाठ किस तरह के होते हैं? संवादों वाले पाठ को कैसे समझा जाए?

2.2.2 कुशल पठन के लिए शब्द पहचान और भाषायी समझ का आवश्यक संतुलन

समझ के साथ पढ़ पाने की क्षमता के लिए ऊपर बताए दोनों आयामों का मज़बूत होना ज़रूरी है। इसे हम नीचे दिए समीकरण से भी समझ सकते हैं।

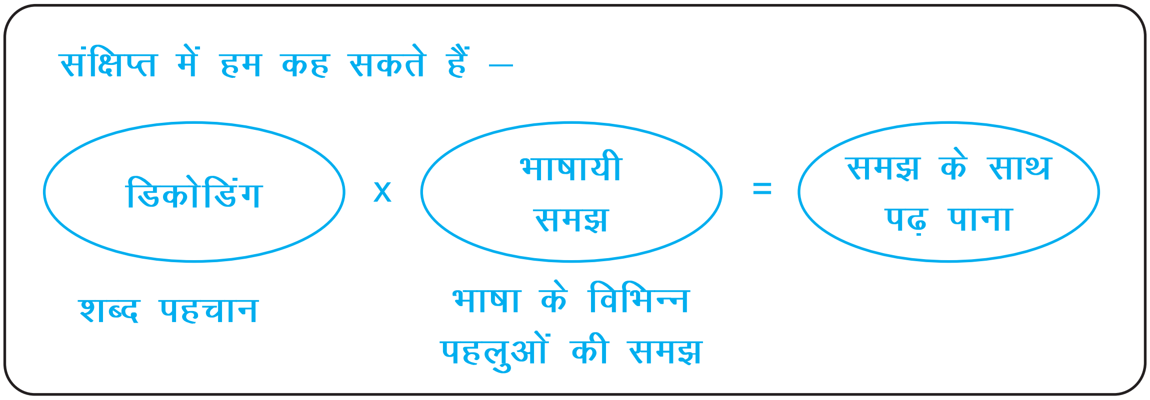

आकृति–7

चित्र में आप देख सकते हैं कि किस प्रकार ये दोनों आयाम बच्चे की पठन क्षमता में योगदान दे रहे हैं। चित्र के चार खंडों को अलग–अलग देखें।

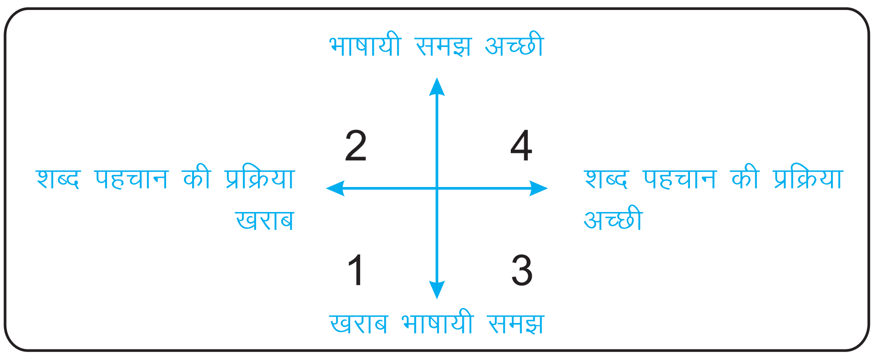

आकृति–8

(I) **खंड–1** : इस खंड में बच्चे की भाषायी समझ और शब्द पहचान, दोनों कमज़ोर हैं। इसलिए यह बच्चा न तो अच्छी तरह पाठ पढ़ सकता है और न ही उसे अच्छी तरह समझ सकता है।

(II) **खंड–2** : इस खंड के बच्चे की भाषायी समझ मज़बूत है, लेकिन शब्द पहचान अभी तक कमज़ोर है। इसलिए ऐसा बच्चा बोलने और समझने में माहिर है, लेकिन पढ़ने में नहीं।

(III) **खंड–3** : इस खंड में जो बच्चा है उसने डिकोडिंग के ज़रिए शब्द पहचान तो अच्छी तरह सीख ली है, लेकिन भाषायी समझ कमज़ोर होने के कारण वह पाठ का अर्थ नहीं निकाल सकता। इसलिए वह कमज़ोर पाठक बना रहता है।

(IV) **खंड–4** : जो बच्चा इस खंड में पहुँच गया है उसकी शब्द पहचान और भाषायी समझ दोनों मज़बूत हो चुके हैं। इसलिए यह बच्चा कुशल पठन कर सकता है।

स्पष्ट है कि स्कूल के शुरुआती/आरंभिक वर्षों में भाषा शिक्षण के दौरान इन दोनों आयामों पर एक साथ काम करना चाहिए।

अभ्यास कार्य–2

आपके अनुसार आपकी कक्षाओं में या जिन कक्षाओं में आप विज़िट करते है उन कक्षाओं में कितने बच्चे इन खण्डों में होते हैं? नीचे दिखाए टेबल में से चुनें और अपने मेंटर को इसकी फ़ोटो भेजें।

खंड	कक्षा–2 के औसतन कितने प्रतिशत बच्चे होंगे
1.	ज़्यादातर/लगभग आधे/कुछ/बहुत कम/कोई नहीं
2.	ज़्यादातर/लगभग आधे/कुछ/बहुत कम/कोई नहीं
3.	ज़्यादातर/लगभग आधे/कुछ/बहुत कम/कोई नहीं
4.	ज़्यादातर/लगभग आधे/कुछ/बहुत कम/कोई नहीं

अपना उत्तर भेजने के लिए दिए गए QR कोड का प्रयोग करें।

पढ़ना सीखने के ये दो महत्वपूर्ण आयाम परस्पर आपस में मिलकर ही किसी बच्चे को कुशल पाठक बनाते हैं। डिकोडिंग के कौशल का इस स्तर तक विकास होना चाहिए कि बच्चा स्वचालित रूप से शब्दों को पहचानने लगे और इस प्रक्रिया में उसे बहुत कम मेहनत करनी पड़े । ऐसा होने से बच्चे का पूरा ध्यान / दिमाग अर्थ निर्माण में लग सकता है।

अच्छे और व्यवस्थित शिक्षण से डिकोडिंग कौशल 1–2 वर्षों में ही बहुत मज़बूत हो सकता है। दूसरी ओर भाषायी समझ शुरुआती प्रारंभिक कक्षाओं से लेकर पूरे जीवन लगातार चलती रहती हैं। प्रारंभिक कक्षाओं से ही अर्थ निर्माण की प्रक्रियाओं पर ज़ोर देना चाहिए । यह काम शुरु में मौखिक भाषा गतिविधियों के ज़रिए सुंदर ढंग से करवाया जा सकता है । इनमें से यदि एक भी आयाम कमज़ोर रह जाता है तो बच्चा कुशल पाठक नहीं बन सकेगा।

असल में पठन में बहुत–सी प्रक्रियाएँ एक साथ चलती हैं। नीचे हम इन सब प्रक्रियाओं को दे रहे हैं।

अभ्यास कार्य–3

नीचे दी गई प्रक्रियाओं में से कौनसी प्रक्रिया 'शब्द पहचान' की हैं और कौनसी 'भाषायी समझ' की? इन प्रक्रियाओं को आगे दिए गए टेबल में सही शीर्षक के अंतर्गत लिखें। पूरी प्रक्रिया को लिखने के स्थान पर केवल उसकी क्रमांक संख्या को टेबल में भरें और उसकी फोटो अपने मेंटर को भेजें।

1. पहले पढ़े गए शब्द का अर्थ दिमाग के मौजूद भंडार से निकालना
2. ध्वनियों को जोड़ना
3. पहचानी गई ध्वनियों का उच्चारण करना
4. आकृतियों को पहचानना
5. अपने पूर्व ज्ञान व अनुभवों को सक्रिय करना
6. पूरे वाक्य का अर्थ समझना
7. पूरा शब्द बोलना
8. पूर्व ज्ञान व अनुभवों का प्रयोग करके पढ़े हुए पाठों को समझना और विश्लेषण करना

शब्द पहचान प्रक्रियाएँ	भाषायी ज्ञान प्रक्रियाएँ
------------------------	------------------------
------------------------	------------------------
------------------------	------------------------

अपना उत्तर भेजने के लिए दिए गए QR कोड का प्रयोग करें।

हम देख सकते हैं कि पठन में आकृतियों को पहचानना, उनकी ध्वनियों का उच्चारण करना, जोड़ना, पूरा शब्द बोलना, मस्तिष्क में मौजूद उस शब्द का अर्थ निकालना, पहले पढ़े इन शब्दों के अर्थ से नए शब्दों के अर्थ को जोड़ना, पूरे वाक्य का अर्थ समझना। साथ–ही–साथ अपने पहले के ज्ञान और अनुभवों को, जो पढ़े गए पाठ से जुड़े है, उन्हें सक्रिय करना और उनका इस्तेमाल करते हुए हर वाक्य और पाठ का अर्थ निर्माण करते जाना और विश्लेषण करना – ये सभी प्रक्रियाएँ एक साथ चलती हैं। वाकई, पढ़ना एक जटिल प्रक्रिया है। किसी ने ठीक कहा है– पढ़ना सिम्फ़नी (वाद्य–वृंद–रचना) – ऑर्केस्ट्रा जैसा है।

ऑर्केस्ट्रा के साथ यह समानता तीन बिंदुओं को निरूपित करती है :

(I) **पहली बात, सिम्फनी** (Symphony) **की तरह पढ़ना भी एक समग्र क्रिया होती है।** जहाँ एक तरफ़ पढ़ने में अक्षरों की पहचान, शब्दों की डिकोडिंग और उनका अर्थ जानने जैसे कई उप कौशलों पर महारत की आवश्यकता होती है वहीं दूसरी तरफ़ इनमें से किसी एक कौशल को अर्जित कर लेना पढ़ना नहीं होता। पढ़ना तभी होता है जब इन सभी हिस्सों को मिलाकर एक सहज एकीकृत प्रदर्शन में ढाला जाता है।

(II) दूसरी बात, पढ़ने (या अच्छी तरह पढ़ने) में सफलता के लिए उसी प्रकार **लंबे समय तक अभ्यास की आवश्यकता होती है,** जिस प्रकार वाद्य यंत्रों को बजाने का कौशल लंबे अभ्यास से आता है।

(III) तीसरी बात, किसी संगीत रचना की तरह (i) **पाठक की पृष्ठभूमि,** (ii) **पढ़ने के उद्देश्य और** (iii) **पढ़ने के संदर्भ** के आधार पर किसी पाठ या पाठ्यसामग्री की भी एक से अधिक व्याख्याएँ की जा सकती हैं।

2.2.3 पढ़ने और लिखने का आपसी संबंध

पठन एवं लेखन दोनों एक–दूसरे को मज़बूत करते हैं। शोधों ने दिखाया है कि जब बच्चे कई प्रकार की पठन सामग्री पढ़ते हैं तो वे बेहतर लेखन कर पाते हैं, क्योंकि उनकी भाषा की समझ मज़बूत होती जाती है। साथ ही, वे जब अधिक पढ़कर पाठ संरचना को बेहतर तरीके से समझने लगते हैं, तो उन्हें अपने लेखन में भी शामिल करते हैं। यही नहीं, बच्चे जितना ज़्यादा पढ़ते हैं, उन्हें आस–पास की दुनिया के बारे में उतना ही ज़्यादा ज्ञान हासिल होता है। नए–नए विचार मिलते हैं, जिससे उनका लेखन समृद्ध होता जाता है।

दूसरी ओर लिखने का अभ्यास करने से बच्चों का पठन कौशल बेहतर होता जाता है। यह बात ख़ासकर उन बच्चों के लिए सच है जो ध्वनि–चिह्न का संबंध यानी डिकोडिंग सीख रहे हैं। जब बच्चे पढ़े हुए शब्दों को लिखने लगते हैं, तो उन्हें ध्वनि व चिह्न का संबंध स्पष्ट रूप से समझ में आने लगता है। शुरुआत में अगर बच्चे पढ़ते और लिखते समय शब्दों को बोलते भी रहें तो उन्हें और फ़ायदा होता है।

बच्चे खुद लिखते हैं, तो उसे बार–बार पढ़ते हैं, क्योंकि उन्हें अपनी लिखी हुई चीज़ को बार–बार पढ़ने में सबसे ज़्यादा रुचि होती है। इस तरह उनका पढ़ने का कौशल भी मज़बूत होता है। इसी तरह किसी पढ़े गए पाठ से संबंधित लिखने का काम किया जाता है, तो वह पाठ बेहतर समझ में आता है।

इस प्रकार पढ़ने और लिखने का कार्य कक्षा में एक साथ कराया जाता है तो इससे बच्चे बेहतर पाठक, लेखक और चिंतक बनते हैं। भारतीय भाषा कक्षाओं में पठन और लेखन का अभिन्न जुड़ाव अक्सर ठीक तरह नहीं समझा जाता। ज़्यादातर शिक्षक पठन और लेखन को पहले–बाद के क्रम में देखते हैं, और इसलिए इनके अभ्यास को कक्षाओं में अलग–अलग ही रखा जाता है।

2.3 लिखना क्या है?

हम लेखन का निम्न उद्देश्यों के लिए उपयोग करते हैं :

(I) अपने विचारों और सूचनाओं का दूसरों के साथ आदान–प्रदान करना। (जो लोग हमारे सामने नहीं हैं।)

(II) लिखना सीखने की एक प्रक्रिया है जिसके ज़रिए बच्चों की सोच व समझ बढ़ती है और लगातार स्पष्ट होती जाती है ।

गतिविधि–7

लिखने के लिए अक्सर हमें क्या–क्या करना पड़ता है,नीचे दिए कार्यों में से चुनें।

1. दोबारा पढ़कर संशोधन करना	2. सही विराम चिह्न लगवाना	3. कच्चा लिखकर देखना	4. जैसा बोलते हैं वैसा लिखना
5. उपयुक्त शैली का चयन	6. ध्यान से सोचना	7. पाठक की रुचि और स्तर के बारे में सोचना	8. वर्तनी का ध्यान रखना
9. योजना बनाना	10. जैसा सोचते हैं वैसा लिखना	11. व्याकरण का ध्यान रखना	12. बात को स्पष्ट करने की कोशिश करना

हमारे अनुसार इसमें से 4 और 10 को छोड़कर हमें बाकी सब कुछ करना पड़ता है।

ध्यान दें कि लेखन का, भाषा व प्रस्तुति के नियमों के अनुसार सही होना ज़रूरी है। लिखने का अपना एक अनुशासन है जिसका लेखक को ध्यान रखना पड़ता है। इसे हम **'सटीकता'** कह सकते हैं।

दूसरी ओर लेखन अपने उद्देश्य के अनुसार भी ढलना चाहिए। हम जानकारी के लिए लिख रहे हैं या साहित्य रच रहे हैं या पत्र लिख रहे हैं – लेखन की शैली उसके अनुसार ही चुनी जाएगी। विचारों को इस तरह प्रस्तुत करना होगा कि उनका पाठक पर वांछित प्रभाव पड़ सके। इसलिए लेखन का एक दूसरा महत्वपूर्ण आयाम **'विषयवस्तु'** होता है।

शुरुआती सालों में बच्चों के लिए लेखन के उद्देश्य और उसके स्वरूपों के बारे में जानना ज़रूरी होता है। ख़ासकर यह समझना कि लेखन अलग–अलग उद्देश्यों या पाठकों के लिए अलग हो सकता है और इनके अनुसार उसके कई भिन्न स्वरूप हो सकते हैं। जो बच्चे कम साक्षरता वाले परिवारों से आते हैं उन्हें लेखन के विभिन्न स्वरूपों का ज्ञान नहीं होता या जिन्होंने लेखन के विभिन्न रूप नहीं देखें होते, विशेषकर ऐसे बच्चे लेखन का उद्देश्य नहीं समझ पाते।

गतिविधि–8

ज़रा सोच कर देखें कि 5.6 साल के एक छोटे बच्चे ने लेखन के नीचे दिए जा रहे प्रकारों में से कौन से देखें और समझे होंगे।

दुकानों के बोर्ड | निबंध | बोतलों/डब्बों पर लेबल | कहानी

कविता | खबरें | चिट्ठी | इंटरनेट | पत्रिका

किताब | होटल का मीनू | मोबाइल चैट | सूचना बोर्ड

असल में लेखन एक जटिल भाषायी गतिविधि है जिसके लिए बच्चों को कई तरह के कौशलों की आवश्यकता पड़ती है। जैसे :

(I) **मोटर कौशल** : अक्षर सही ढंग से लिखने के लिए हाथ और उँगलियों का सही संचालन

(II) **भाषा संरचना संबंधी कौशल** : जैसे ध्वनियों को चिह्नों में बदलना, सही वाक्य बना पाना, विराम चिह्न आदि लिख पाना।

(III) **संज्ञानात्मक कौशल** : क्या लिखना है– इस बारे में सोचने, बात को तार्किक ढंग से लिखने और एक सूत्र में पिरोने का कौशल।

कुछ सालों की अच्छी स्कूली शिक्षा के बाद बच्चे पहले वाले दोनों कौशल अर्जित कर लेते हैं, जिससे ये क्रियाएँ स्वचालित हो जाती हैं। **लेखन के तीसरे कौशल का विकास बहुत ज़रूरी है, जिसमें सोचना पड़ता है कि क्या लिखना है और उसे दूसरों के सामने कैसे पेश करना है।**

शुरुआती कक्षा के बच्चे को इसलिए लिखने में समस्या आती है क्योंकि उसे एक साथ इन तीनों आयामों को सीखना और इस्तेमाल करना होता है। छोटे बच्चों के लिए यह बहुत बड़ी चुनौती है। बच्चे की मदद करने के लिए शिक्षकों को इन दोनों पहलुओं पर ध्यान देना चाहिए –

(I) बुनियादी लेखन कौशल, जैसे– अक्षर बनाना, वर्तनी की समझ, लिंग, काल, क्रिया–रूपों आदि का ज्ञान, वाक्य संरचना और विराम चिह्नों का ज्ञान आदि।

(II) विचारों को व्यवस्थित करके रचना कर पाना।

3. स्वतंत्र पाठक कौन होता है?

अभी तक हमने पढ़ना और लिखना सीखने की बात की। 'पढ़ना सीखने' का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य यह भी है कि बाद में जाकर (जैसे– तीसरी कक्षा से) बच्चे 'पढ़कर सीखना' शुरू करें। उन्हें पढ़ने में मज़ा आना चाहिए और पढ़ने की आदत हो जानी चाहिए। यह अनायास ही नहीं होता है। इसके लिए प्रारंभिक कक्षाओं में पढ़ना सिखाने की प्रक्रिया रुचिकर होनी चाहिए और बच्चों को सरल और रोचक कहानी की किताबों से जुड़ने के अनेक अवसर मिलने चाहिए। **'पढ़ने की प्रेरणा', 'मज़े के लिए पढ़ना' और 'पढ़ने की आदत' बनाना प्रारंभिक भाषा शिक्षण का एक ज़रूरी उद्देश्य है।** इसी तरह बच्चों को अपने शब्दों में रचना करने का अभ्यास हो जाए और उसमें आनंद आए। अलग–अलग तरह के लेखन कार्य (चित्र पर लिखना, पढ़े हुए पाठ पर प्रतिक्रिया देना, कविता लिखना, कहानी बनाना/बढ़ाना/बदलना, निमंत्रण कार्ड बनाना, चिट्ठी लिखना इत्यादि) करने की क्षमता विकसित होनी चाहिए और उसमें आनंद आए। हमारा यह उद्देश्य होना चाहिए कि कक्षा पाँचवीं तक बच्चे स्वतंत्र पाठक और लेखक बन जाएँ।

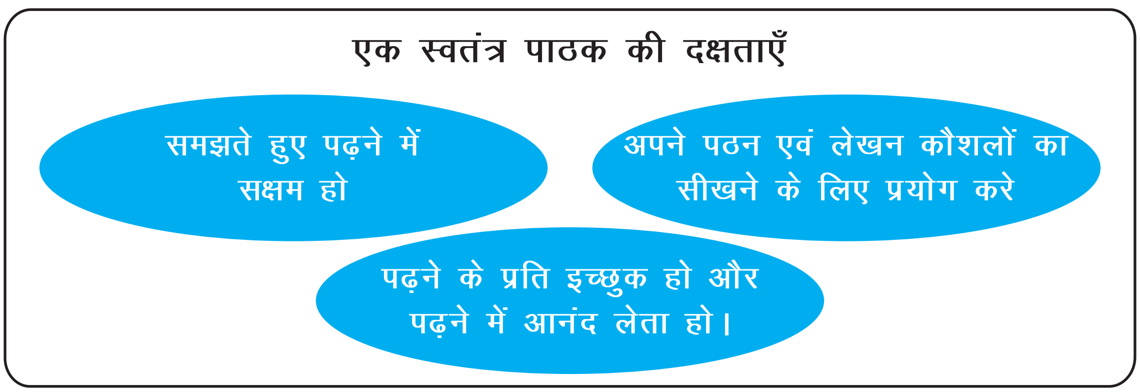

आकृति–9

मकसद यह होना चाहिए कि प्राथमिक स्कूल खत्म होते–होते बच्चे स्वतंत्र पाठक बन जाएँ। यानी, उनके पास अच्छा साक्षरता कौशल और पढ़ने की आदत– दोनों हो।

पठन कौशल एवं पठन आदत परस्पर जुड़ी होती हैं और एक–दूसरे को सींचती हैं

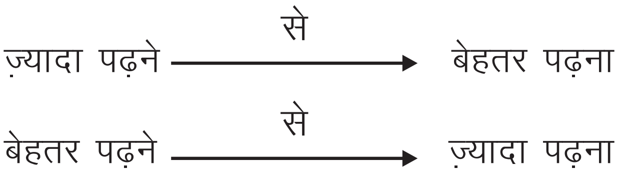

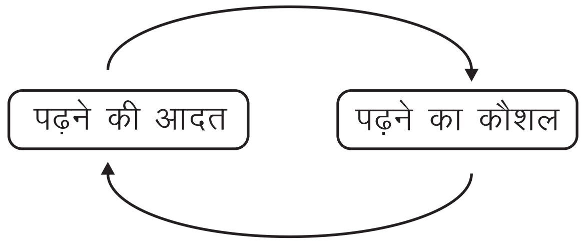

4. भाषा शिक्षण को प्रभावित करने वाली अन्य परिस्थितियाँ

अभी तक इस मॉड्यूल में हमने मौखिक भाषा पठन और लेखन के तकनीकी पहलुओं को समझा लेकिन क्योंकि साक्षरता मनुष्यों के लिए नैसर्गिक नहीं है, इसलिए कई अन्य परिस्थितियाँ साक्षरता सीखने पर गहरा प्रभाव डालती हैं। शिक्षकों के लिए इन प्रभावों को समझना बहुत ज़रूरी है, ताकि वे प्रभावी ढंग से बच्चों में साक्षरता की मज़बूत नींव तैयार कर सकें। ये परिस्थितियाँ बच्चों के विभिन्न भाषायी, सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों से संबंधित हैं। शिक्षकों के लिए यह समझना बहुत ज़रूरी है कि सीखने वाले, यानि बच्चे, शिक्षण के सफल होने में सबसे बड़ी भूमिका रखते हैं। बच्चों की कठिनाइयाँ या संदर्भों को समझे बिना किसी भी प्रकार का शिक्षण संभव नहीं है। बच्चों के संदर्भ शिक्षण पर कैसा प्रभाव डालते हैं। यह समझने के लिए हम एक बच्चे, गनपति, की केस–स्टडी पढ़ते हैं।

गनपति की केस स्टडी

गनपति छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले के जगदलपुर ब्लॉक के प्राथमिक स्कूल, हाटपदमुर में, कक्षा 3 में पढ़ता है। गनपति के पिता का स्वर्गवास हो चुका है और उसकी माँ एवं दो बड़े भाई मज़दूरी करते हैं। उसकी माँ बात करते हुए बताती है कि कभी काम मिलता है कभी नहीं मिल पाता। बस, किसी तरह से घर चला रहे हैं।

गनपति के दिन की शुरुआत सुबह 6 बजे से होती है। उसकी माँ और बड़े भाई सुबह होते ही काम के लिए निकल जाते हैं। गनपति अपनी दादी की मदद से तैयार होकर स्कूल जाता है। गनपति के घर में प्रिंट के नाम पर कुछ भी दिखाई नहीं देता। कुछ सामानों पर लिखे गए नामों के अलावा। इनको भी गनपति एवं उसके घर के लोग चित्र से ही पहचानते हैं। उनके घर में न कोई किताब है और न ही किसी प्रकार की पत्रिका उन्होंने देखी है।

गनपति घर पर भतरी भाषा में बात करता है। उसके स्कूल में शिक्षक हिंदी भाषा का उपयोग करते हैं। गनपति को हिंदी बहुत कम ही समझ में आती है। तीन साल स्कूल में आने के बाद भी उसकी बोलचाल की भाषा में 80 प्रतिशत शब्द भतरी भाषा के ही होते हैं। वह हमेशा कक्षा के आख़िर में बैठता है। जब उससे यह पूछा गया कि वह

कक्षा में आगे क्यों नहीं बैठता तो उसने कोई जबाव नहीं दिया लेकिन उसके बगल में बैठने वाले एक बच्चे ने हँसते हुए भतरी में बताया कि इसे हिंदी आती ही नहीं है।

कक्षा में शिक्षक पाठ पढ़ाने के दौरान हिंदी में व्याख्या करते हैं जो गनपति को बहुत ही कम समझ में आ पाती है। गनपति समझने की कोशिश करता है, लेकिन जब शिक्षक के पाठ से संबंधित कुछ भी पूछने पर गनपति कोई भी ज़बाव नहीं दे पाता है। उसे अक्सर दूसरे बच्चों के पीछे–पीछे दोहराते हुए देखा जा सकता है। उसने बुदबुदाना सीख लिया है ताकि ऐसा लगे कि वह शिक्षक की बात का ज़वाब दे रहा है और शिक्षक का ध्यान उसकी तरफ़ ज़्यादा न चला जाए। उसको बोर्ड पर आकर लिखने के लिए नहीं बुलाया जाता, क्योंकि शायद शिक्षक यह समझते हैं कि वह सही तरह से पढ़ या लिख नहीं पाएगा।

कक्षा में और कक्षा के बाहर के गनपति में बहुत अंतर होता है। हालाँकि कक्षा के बाहर वह अपने दोस्तों के साथ भतरी में मज़े से गप्पें मारता है और खुश रहता है। लेकिन कक्षा में जाते ही उसे पता नहीं क्या हो जाता है कि वह कुछ नहीं बोलता। उसके शिक्षक उसे शर्मीला बच्चा कहते हैं। वे इससे बहुत परेशान रहते हैं कि उससे कितना भी कहा जाए, वे कुछ बोलता ही नहीं है। गनपति को कई दिन स्कूल आने का मन नहीं करता है। गनपति की दुविधा यह है कि घर पर सभी भतरी भाषा ही बोलते हैं। स्कूल में अपने दोस्तों के साथ वह अपनी घर की भाषा में ही बात करता है। शिक्षक भतरी भाषा जानते हैं पर कक्षा में इस्तेमाल नहीं करते। स्कूल की भाषा गनपति को समझ में नहीं आती। गनपति भी हिंदी बोलने की कोशिश करता है तथा थोड़ा बहुत बोल भी पाता है। उसकी प्रगति से शिक्षक संतुष्ट नहीं हैं। अब वह धीरे–धीरे पाठ्यपुस्तक के बहुत से शब्द पढ़ लेता है– पर उसे अर्थ पूरी तरह समझ में नहीं आता है।

अभ्यास कार्य–4

गनपति के संदर्भ में ऐसे कौन से पहलू हैं जिनको एक भाषा के शिक्षक को समझना आवश्यक है, क्योंकि इसका प्रभाव बच्चे के भाषा सीखने पर सीधा–सीधा होता है?

अपना उत्तर भेजने के लिए QR कोड का प्रयोग करें।

यदि आपकी कक्षा में गनपति जैसे बच्चे हैं तो आप भाषा शिक्षण रणनीति में क्या मुख्य बदलाव करेंगे?

बच्चों की पृष्ठभूमि किस प्रकार महत्वपूर्ण होती है इस पर हम मॉड्यूल–2 में विस्तार से बात करेंगे।

लेकिन गनपति के बारे में जो स्पष्ट झलकता है उसपर अभी हम कुछ नज़र डाल सकते हैं। गनपति जैसे बच्चों के साक्षरता शिक्षण में निम्न बाधाएँ हैं –

- स्कूल में बहुत से बच्चे मौखिक परपंरा से आते हैं यानी ऐसे घरों से जहाँ सारा संप्रेषण बोलकर ही होता है। लिखाई का उनके घरेलू जीवन में कोई स्थान नहीं है।
- ज़ाहिर है ऐसे बच्चों का लिखित भाषा से कोई परिचय नहीं होता, और वे लिखाई का उद्देश्य तक नहीं जानते। इसलिए उनकी साक्षरता–सीखने की तैयारी नहीं के बराबर होती है।
- बच्चों की बोलचाल की भाषा और लिखित औपचारिक भाषा जो पाठ्यपुस्तकों और कहानी की किताबों में प्रयोग होती है, में बहुत अंतर होता है।
- भारत में बड़ी संख्या में बोलियाँ या भाषाएँ होने से गनपति जैसे बच्चे स्कूल की मानक भाषा को बिल्कुल या अच्छी तरह नहीं समझते और स्कूल की पढ़ाई उनको इस अपरिचित भाषा को समझने–सीखने का समय नहीं देती ।

ऊपर बताए गए तथा कई अन्य सामाजिक–सांस्कृतिक कारणों से बच्चों का भाषा शिक्षण गंभीर रूप में प्रभावित होता है।

निष्कर्ष और सारांश

- भाषा को मौखिक, लिखित या सांकेतिक अभिव्यक्ति के लिए प्रयोग की जाने वाली औपचारिक व्यवस्था के रूप में समझा जा सकता है। लेकिन, असल में वह इससे कहीं अधिक व्यापक है।
- भाषा मनुष्य को बहुत सी मानसिक प्रक्रियाओं के लिए सक्षम बनाती है। यह विचार, संप्रेषण, सोचने–समझने, अवधारणाएँ बनाने, तर्क करने, समस्या–समाधान, मूल्यांकन जैसी क्षमताओं की जननी तथा माध्यम है।
- भाषा सीखने का सबसे सशक्त माध्यम है, क्योंकि वह अर्थ निर्माण का सबसे महत्वपूर्ण ज़रिया है।
- भाषा–अर्जन के लिए इंसान में जैविक क्षमताएँ हैं, पर साथ ही भाषायी परिवेश का इसमें बहुत बड़ा योगदान होता है।
- दैनिक जीवन की भाषा (बिक्स) तथा स्कूल में प्रयोग होने वाले अकादमिक भाषा (कैल्प) कई रूपों में भिन्न होते हैं। कैल्प को सचेत रूप से सीखना–सिखाना पड़ता है।
- मौखिक भाषा मनुष्य के लिए नैसर्गिक है, लेकिन लिखित भाषा विशेष और अलग उद्देश्यों के लिए तैयार की गई संप्रेषण प्रणाली है।
- साक्षरता में केवल पढ़ना–लिखना ही नहीं, बल्कि सोचना तर्क व विश्लेषण करना और दुनिया को समझना शामिल है।
- प्रारंभिक कक्षाओं में मौखिक भाषा का दृढ़ विकास सभी प्रकार के साक्षरता कौशलों की आवश्यक व ठोस नींव है।
- पठन का प्रधान उद्देश्य अर्थ निर्माण करना है। प्रारंभिक कक्षाओं में सभी साक्षरता शिक्षण में अर्थ निकालने की केंद्रीय भूमिका होनी चाहिए। अर्थ निकालना केवल सरल शब्दार्थ जानना नहीं है, बल्कि गहरे, निष्कर्ष आधारित अर्थ हैं जो पूर्व ज्ञान से जुड़ते हों।
- बच्चों को कुशल पाठक बनाने के लिए दो तरह की क्षमताएँ साथ–साथ विकसित होनी चाहिए – शब्द पहचान क्षमताएँ (डिकोडिंग आदि) और भाषायी समझ की क्षमताएँ। ये दोनों एक के बाद एक नहीं आनी चाहिए ।
- शुरुआती कक्षाओं में पठन और लेखन की प्रक्रियाएँ एक–दूसरे को मज़बूत करती हैं और इसलिए साथ–साथ चलनी चाहिए।
- डिकोडिंग की क्षमताएँ जल्दी और मज़बूती से विकसित होनी चाहिए ताकि शब्द पहचान पर कम मेहनत लगे या वह स्वचालित हो जाए, ताकि पाठक का सारा ध्यान अर्थ निकालने पर केंद्रित किया जा सके।

- भारतीय कक्षाओं में बच्चे विभिन्न प्रकार की भाषायी पृष्ठभूमि से आते हैं, स्कूल की भाषा सीखने–समझने के लिए उनको सहायता की ज़रूरत होती है और बच्चों की भाषाओं को कक्षा के अंदर जगह मिलनी चाहिए।
- बहुत से बच्चों को घर पर लिखित सामग्री से परिचय नहीं होता है। मौखिक संस्कृति से आने वाले ये बच्चे लेखन के उद्देश्य व स्कूली औपचारिक भाषा से भी पूरी तरह अपरिचित होते हैं, इसलिए दोनों तरह से ही ये साक्षरता शिक्षण के लिए तैयार नहीं होते। प्रारंभिक भाषा शिक्षण हेतु रणनीतियाँ बनाते समय इस बात को ध्यान में रखना चाहिए।

स्व–आकलन

1. मिलान करें –

क	ख
(i) दृश्य शब्द	• प्रत्येक शब्द और प्रत्येक वाक्य के शाब्दिक अर्थ को समझना।
(ii) स्थानिक समझ	• किसी शब्द को प्रिंट से ध्वनि में बदल कर उच्चारित करने की क्षमता।
(iii) सार्विक समझ	• ऐसे शब्द जिन्हें बच्चे बिना डिकोड किए देखते ही पहचान लेते हैं।
(iv) डिकोडिंग	• पूरे पाठ का सार समझना और अपनी प्रतिक्रिया दे पाना।

2. खाली स्थान भरें –

(i) डॉ. जिम कमिन्स ने दो तरह के भाषायी कौशल दिए हैं –

.... और ....

(ii) शब्द पहचान के तीन प्रमुख तरीके हैं :

...., ... और ....

(iii) समझ के साथ पढ़ना = ... x ....

(iv) लेखन के लिए आवश्यक कौशल हैं :

...., ... और ....

(v) लिखित और मौखिक भाषा में दो फ़र्क़ हैं :

.... और ....

3. सही या गलत का निशान लगाएँ :

(i) साक्षरता के आयामों में सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना और सोचना शामिल है।

(ii) भाषा के तीन घटक है संप्रेषण, विचार और अधिगम।

(iii) मौखिक भाषा विकास सुनने और बोलने की क्षमता तक सीमित है।

(iv) पढ़ने का एक मात्र उद्देश्य है अर्थ निर्माण।

(v) प्रारंभिक कक्षाओं में सारा ज़ोर केवल बच्चों की पठन क्षमता को मज़बूत करने पर होना चाहिए।

अभ्यास कार्य

अभ्यास कार्य–1	पृष्ठ संख्या 09
अभ्यास कार्य–2	पृष्ठ संख्या 31
अभ्यास कार्य–3	पृष्ठ संख्या 32
अभ्यास कार्य–4	पृष्ठ संख्या 38

कॉल प्रश्न

1. चिंतन/ विश्लेषण/ तर्कशीलता भाषा सीखने का एक अभिन्न अंग है, कैसे? अपने अनुभव बताएँ।
2. क्या आपको कभी ऐसा अनुभव हुआ है जब बच्चों (ख़ास तौर से कक्षा– 1 से 3) के गहन सोचने की क्षमता ने आपको हैरान कर दिया हो। कृपया अपने साथियों से साझा करें।
3. पढ़ना सीखने के लिए डिकोडिंग महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, पर अपने आप में पर्याप्त नहीं है। इसके बारे में आपके क्या विचार हैं?
4. आम धारणा यह है कि पहले बच्चे को पढ़ना सिखाना चाहिए और उसके बाद लिखना, इस पर अपनी राय बताएँ।

असाइनमेंट

यहाँ एक लेख दिया जा रहा है। असाइनमेंट हेतु आपको यह लेख पढ़ना है। लेख के अंत में कुछ प्रश्न दिए गए हैं। आपको इन प्रश्नों के जवाब लिखने हैं।

लेखः अशोक की कहानी

यह कहानी एनसीईआरटी के निदेशक रहे प्रोफेसर कृष्ण कुमार द्वारा लिखी गयी है।

अशोक पढ़ना चाहता था। उसके परिवार में कभी कोई स्कूल नहीं गया था। पिता जमीन के छोटे–से टुकड़े पर खेती करते थे, अनपढ़ थे। अशोक ने कई बार जिद की, माँ को समझाया और अंत में पिता मान गए कि उसे प्राइमरी स्कूल में भर्ती करा देंगे।

पहले दर्जे में हिन्दी के अन्तर्गत अध्यापिका ने वर्णमाला सिखाई। एक–एक अक्षर की आवाज हफ्तों रटाई, अक्षरों की आकृति बनाना सिखाया। जिन बच्चों को दिक्कत आती थी उनका हाथ पकड़ कर सिखाया।

स्कूल में एक छोटा–सा ब्लैकबोर्ड था– खूब घिसा हुआ, चॉक के बारीक कणों से इस कदर ढका हुआ कि लिखाई देखने के लिए सिर की नसों का सारा जोर पुतली पर केंद्रित करना होता था। यह ब्लैकबोर्ड अगस्त से अक्टूबर तक वर्णमाला की आकृतियों से ढका रहा। बच्चे एक–एक अक्षर की आकृति बीसियों बार अपनी कॉपी में उतारते। इस तरह नवम्बर के अंत में अशोक ने सारी हिन्दी वर्णमाला सीख ली।

अब अध्यापिका ने पाठ्यपुस्तक की तरफ ध्यान दिया जिसमें हर अक्षर के पास एक शब्द लिखा था और एक चित्र बना था। **क** के पास लिखा था **'कबूतर'**। अशोक शुरू से जानता था कि **क** का मतलब होता था 'कबूतर'। इसलिए जब बहनजी ने अक्षर जोड़कर कबूतर पढ़ना सिखाना चाहा तो अशोक बहुत खुश हुआ। पर उसे यह नहीं समझ में आया कि दरअसल बहनजी के लिए **'क'**, **'बू'**, **'त'** और **'र'** का कुल योग कबूतर है।

अशोक के दृष्टिकोण से **क 'कबूतर'** था। बहनजी के पास इतना समय नहीं था कि अशोक का दृष्टिकोण समझे। **'अशोक का भी कोई दृष्टिकोण है'**– यह बात वे जानती थी या नहीं, मैं कह नहीं सकता। बहरहाल उन्होंने सोचा कि अशोक **क** के लिखे शब्द को देखकर **'कबूतर'** कह रहा है यानी वह पढ़ना सीखने लगा है।

इसी तरह अशोक ने बाकी सब अक्षरों के साथ लिखे शब्द पढ़ना सीख लिया।

अक्षरों की आकृतियाँ स्लेट और कॉपी पर उतारना तो वह पहले ही सीख चुका था। पहले दर्जे का अंत होते–होते वह अपनी प्रगति से काफी खुश था। जब वह दूसरी कक्षा में आया और कक्षा में उससे किताब पढ़ने को कहा गया तो वह इस तरह बोला–

'कबूतर का क, मटर का म, लंगूर का ल, क–म–ल। हर बार उसे इस तरह पढ़ते देखकर अध्यापिका कुछ नाराज हुई।'

अशोक के हर प्रयास के बाद अध्यापिका उससे कहती– **'दूसरे बच्चों को ध्यान से सुनो, उनकी तरह पढ़ो।'** अशोक दूसरे बच्चों को बहुत ध्यान से सुनता, पर यह समझने में असमर्थ रहता कि वह कहाँ गलती कर रहा है। उसे लगता कि दूसरे ठीक उसकी तरह पढ़ रहे हैं। यही शब्द वे पढ़कर सुना रहे हैं। फिर बहनजी उससे क्यों नाराज हैं?

सौभाग्यवश बहनजी और भी कुछ बच्चों पर खीझती थी, इसलिए अशोक अपने को एकदम अकेला नहीं पाता था। किसी तरह उसने दूसरी कक्षा के सारे दिन काट लिए। धीरे–धीरे उसकी क से कबूतर कहने की आदत भी कम हो गई। अब वह इस तरह पढ़ता था –

ग पे उ की मात्रा **गु**

ल पे आ की मात्रा **ला**

ब

क पे आ की मात्रा **का**

फ पे बड़े ऊ की मात्रा **फू**

ल

गु–ला–ब का फू–ल

बहनजी उसे कभी–कभार ही पढ़ने को कहतीं, अक्सर उसके पास की टाटपट्टी पर बैठे बच्चे ही पूरा पाठ पढ़ देते। पर अशोक इस बात से उदास नहीं था। अब तक वह कक्षा तीन में आ चुका था। कक्षा तीन में आकर उसने एक पूरी कविता भी याद कर ली थी। एक दिन जब किताब दोहराते वक्त इस कविता को पढ़ने का नंबर आया तो अशोक ने बगैर सही पेज खोले पूरी कविता पढ़कर सुना दी। बहनजी उससे गुस्सा थीं कि उसने सही पेज क्यों नहीं खोला। अशोक खुश था कि वह बिना किताब देखे पढ़ने लगा है। इस तरह दिन–प्रतिदिन उसके और बहनजी के दृष्टिकोणों का विरोध तीखा होता जा रहा था। ....?

''आखिरकार चौथी कक्षा शुरू हुई। अशोक के गाँव के कई बच्चे स्कूल आना छोड़ चुके थे। उस पर भी दबाव पड़ा, पर वह अडा रहा। वह चाहता था कि जल्दी–जल्दी स्कूल खत्म करके पैसे कमाए। बहनजी कई बार कक्षा में बता चुकी थीं कि जो बच्चे स्कूल में आगे बढ़ते रहेंगे वे खूब बड़े आदमी बनेंगे और पैसे कमाएँगे।''

.... पर चौथी कक्षा की शुरूआत से ही विघ्न पड़ने लगे। 'भूगोल' नाम का एक नया विषय शुरू हुआ। अशोक को भूगोल की किताब में कुछ पल्ले नहीं पड़ा। पहले पेज पर लिखा था, हमारा जिला उबड़–खाबड़ और पथरीला है। यह कर्क रेखा से कुछ ऊपर स्थित है। .... इसकी भू–रचना पठारी प्रकार की है। कक्षा के कई बच्चे यह फर्राटे से

पढ़ना सीख चुके थे। वे खड़े होकर पढ़ते, फिर कॉपी में उतारते। अशोक धीरे–धीरे पढ़ने की कोशिश करता तो बहनजी अधीर हो उठतीं। यही हालत एक और नए विषय **'विज्ञान'** की घंटी में हुई।

महीने भर में बहनजी अशोक से इतना परेशान हो गई कि उन्होंने उससे कुछ भी कहना छोड़ दिया। उनकी अधीरता और नाराजगी का धागा, जिससे अशोक अभी तक बंधा था, उदासीनता में बदल गया। अशोक को लगा कि बहनजी को अब उससे कोई मतलब नहीं है। दिवाली की छुट्टी के बाद वह वापस स्कूल नहीं गया।

कुछ वर्ष बाद जिले में एक सर्वेक्षण हुआ। प्रांतीय शैक्षिक अनुसंधान परिषद् की ओर से दो सर्वेक्षक लंबे–लंबे फॉर्म लेकर आए। सर्वेक्षण का उद्देश्य यह पता लगाना था कि प्राथमिक शिक्षा में **'ड्राप–आउट'** की दर इतनी ऊँची क्यों है? सर्वेक्षकों ने कई गाँव चुने और वहाँ जाकर माता–पिताओं के इंटरव्यु लिए। इस तरह स्कूल छोड़ने वाले सैकड़ों बच्चों के आंकड़ें उनके शैक्षिक अनुसंधान की पकड़ में आ गए।

शिक्षा का कोई सर्वेक्षण हो रहा है, यह मुझे मालूम था। जब मुझे सर्वेक्षण का ठीक–ठीक उद्देश्य मालूम हुआ तो मैं आलस त्यागकर, अपना कौतूहल लिए सर्वेक्षकों से मिलने जा पहुँचा। उनका काम पूरा हो चुका था और वे जाने की जल्दी में थे। मैंने आग्रह किया कि वे मुझे अशोक की **'डेटा–शीट'** दिखा दें। मैं यह जानने को बेहद उत्सुक था कि देश के आंकड़ो में अशोक का **'केस'** किस तरह प्रस्तुत होगा।

सैकड़ों बच्चों के पिताओं की **'डेटा–शीटों'** में से एक को ढूंढ निकालने में सर्वेक्षक–बंधु आनाकानी कर रहे थे। मैंने बातचीत के दौरान अपनी हैसियत और डिग्री का जिक्र किया तो वे तैयार हो गए। ढूँढ़ते–ढूँढ़ते जब अशोक के पिता की **'डेटा–शीट'** मिली तो उसे पढ़कर यह साफ निष्कर्ष निकलता था कि अशोक ने अपने परिवार की आर्थिक स्थिति के संदर्भ में, अपने पिता का हाथ बँटाने के लिए पढ़ना छोड़ा। सर्वेक्षण के समूचे विश्लेषण में अशोक की गणना **'परिवार की आर्थिक स्थिति'** से प्रभावित **'ड्राप–आउट'** बच्चों में की गई। अशोक एक ग्रामीण बाल श्रमिक घोषित हुआ।

मेरे आँखों में आँसू देखकर सर्वेक्षक–बंधु कुछ घबरा गए। वे बोले, क्या यह बच्चा आपके रिश्ते में आता है? मैंने कहा, नहीं! पर मैं उसे अच्छी तरह जानता हूँ। मुझे लगता है आप उसका केस ठीक से समझ नहीं पाए हैं। सर्वेक्षक ने कहा, अब एक–एक केस को कहाँ तक समझा जाए? फिर कुछ बात बदलकर वह बोला, आप तो दिल्ली में रहते हैं, नई शिक्षा नीति कब से लागू होने वाली है?

असाइनमेंट के लिए दिशा निर्देश

आपको अपने उत्तर लिखते हुए निम्न बिंदुओं का ध्यान रखना है :

- दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखने हेतु आपको लेख के अलावा मॉड्यूल से बनी समझ का भी इस्तेमाल करना हैं।
- उत्तर अपने शब्दों में दें और कोशिश करें कि वह सटीक हो और दिए गए प्रश्न पर केंद्रित हो।
- हर प्रश्न की शब्द सीमा दी गयी है उसका ध्यान रखें। दिए गए बिन्दुओं के अनुसार अपने उत्तर लिखें।

अपने उत्तर टाइप करके मेंटर व इस ईमेल पते– llfassignment@gmail-com पर भेजें।

प्रश्न जिनके जवाब मेंटर को भेजने हैं : (कुल अंक 10)

1. पढ़ना किसे कहते हैं, इस पर मॉड्यूल में काफी चर्चा हुई हैं। क्या अशोक की अध्यापिका का पढ़ने को लेकर यही नज़रिया है? अध्यापिका के अनुसार पढ़ना क्या है? आप किन्हीं 4 बिन्दुओं के आधार पर अपना उत्तर लिखें (4 अंक)

   (i) ....

   (ii) ....

   (iii) ....

   (iv) ....

2. अशोक की कक्षा में भाषा शिक्षण संबंधी क्या–क्या चुनौतियाँ दिखाई दे रही हैं? सोचकर कोई तीन बिन्दु लिखें। (शब्द सीमा 150 शब्द – 3 अंक)

   (i) ....

   (ii) ....

   (iii) ....

3. अशोक के 'ड्राप–आउट' होने के मुख्य कारण क्या हो सकते हैं ? कोई तीन कारण लिखें। (शब्द सीमा 150 शब्द – 3 अंक)

(i) ....

(ii) ....

(iii) ....

संदर्भ

1. एनसीईआरटी नैशनल फ़ोकस ग्रुप पोजिशन पेपर ऑन टीचिंग ऑफ इंडियन लैंग्वेजेज़। इसे डाउनलोड किया जा सकता है।
www.ncert.nic.in/new-n_GoBack_GoBackcert/rightside/links/pdf/fourms-groups/Indian-Languages.pdf

2. डिप्लोमा इन एजुकेशन, छत्तीसगढ़, विस्तार शिक्षा सामग्री (2013), मॉड्यूल/इकाई 4 : भाषा और विचार का ताना बाना (पृष्ठ 150–178);
http://www.scert.cg.gov.in/pdf/dedsecond2013/hindilang2.pdf इसे से डाउनलोड किया जा सकता है।

3. बच्चे की भाषा और अध्यापक, कृष्णकुमार, एनबीटी, अध्याय 1.
http://arvindguptatoys.com/arvindgupta/bhashaaurshiksha.pdf

4. जयराम, क. (2014) एसआरटीटीटी और ओईएलपी समझ से पढ़ना– परामर्श रिपोर्ट. न्यू दिल्ली
http://www.oelp.org/wp-content/uploads/2015/05/3-consultation-report-2014-hindi.pdf

5. ए गाइड टू इफेक्टिव इंस्ट्रक्शन इन राइटिंग : किंडरमार्डन टू ग्रेड 3 : ओंटारियो,
http://www.eworkshop.on.ca/edu/resources/guides/Guide_Writing_%20K_3.pdf से डाउनलोड किया गया।

6. ''व्हॉट इज़ रीडिंग?'' ऐरिक डाइजेस्ट

7. दी न्यू कन्सेप्युअल फ्रेमवर्क फॉर टीचिंग रीडिंग: दी सिंपल व्यू ऑफ रीडिंग– ओवरव्यू फॉर लिट्रेसी लीडर्स एंड मैनेजर्स इन स्कूल्स एंड अर्ली ईयर्स सैटिंग्स. रोज़ रिपोर्ट (2006).

http://arkengarthdale.n-yorks.sch.uk/data/documents/Simple-view-of-reading-background-information.pdf

कोर्स के सभी मॉड्यूल एक नज़र में

मॉड्यूल	विषय
मॉड्यूल–1	प्रारंभिक भाषा और साक्षरता : एक झलक
मॉड्यूल–2	प्रारंभिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण : एक समीक्षा
मॉड्यूल–3	सीखने–सिखाने के कुछ सिद्धांत और रणनीतियाँ
मॉड्यूल–4	प्रारंभिक कक्षाओं में संतुलित भाषा शिक्षण
मॉड्यूल–5	प्रारंभिक साक्षरता के बुनियादी कौशल : भाग–1
मॉड्यूल–6	प्रारंभिक साक्षरता के बुनियादी कौशल : भाग–2
मॉड्यूल–7	प्रवाह और समझ के साथ पठन : शिक्षण रणनीतियाँ भाग–1
मॉड्यूल–8	प्रवाह और समझ के साथ पठन : शिक्षण रणनीतियाँ भाग–2
मॉड्यूल–9	लेखन कौशल का विकास : शिक्षण रणनीतियाँ
मॉड्यूल–10	आकलन व कक्षा में बहुस्तरीय अधिगम स्थिति कुछ रणनीतियाँ और पांच खंडीय रूपरेखा
मॉड्यूल–11	विविध भाषाई परिस्थितियों में प्रारंभिक भाषा और साक्षरता विकास
मॉड्यूल–12	भाषा व साक्षरता शिक्षण की रूपरेखा

© लैंग्वेज एंड लर्निंग फ़ाउंडेशन 2018
इस कोर्स के तहत छपी किसी सामग्री का पुनः प्रकाशन लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन की अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता। यदि आप इसमें से कुछ सामग्री प्रशिक्षण के लिए इस्तेमाल करना चाहते हैं, तो हमें course@languageandlearningfoundation.org पर ईमेल भेजें।

इस कोर्स का संचालन टाटा ट्रस्ट्स के सहयोग से संभव हो पाया है। टाटा ट्रस्ट्स के लिए अध्यापक क्षमतासंवर्धन शिक्षा में विकास का एक बहुत महत्वपूर्ण बिंदु है, जिसके चलते वे इस कार्यक्रम के संचालन में योगदान दे रहे हैं।

संपर्क करें–

ऑफिस पता : लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन; बी–1/2, प्रथम तल, सफदरजंग एन्क्लेव, आन्ध्रा बैंक के पास, नई दिल्ली–110029
फ़ोन : 011–26106045
ईमेल : course@languageandlearningfoundation.org

लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन, रजिस्ट्रेशन नंबर–244/2015–16

मुद्रक : पिंक ग्राफिक्स, दिल्ली

LLF Language and Learning foundation

TATA TRUSTS